इकाई 14 प्रशासनिक संगठन, अर्थव्यवस्था और समाज*

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 मौर्य साम्राज्य का आधार और शुरुआत

14.3 प्रशासन तंत्र

14.3.1 स्रोत

14.3.2 राज्य शासन

14.3.3 *अमात्य*

14.3.4 सैन्य प्रशासन

14.3.5 गुप्तचर विभाग

14.3.6 राजस्व प्रशासन

14.3.7 न्याय व्यवस्था

14.3.8 नगरीय प्रशासन

14.3.9 प्रांतीय प्रशासन

14.3.10 स्थानीय प्रशासन

14.4 मौर्य साम्राज्य की धारणाएँ

14.5 मौर्यकाल : अर्थव्यवस्था और समाज

14.6 मौर्योत्तरकालीन राज्य

14.6.1 शुंग और खारवेल

14.6.2 इंडो-ग्रीक

14.6.3 शक और पह्लव वंश

14.6.4 कुषाण वंश

14.6.5 गैर-राजतंत्र / *गण* शासन / कबीले पर आधारित राज्य व्यवस्था

14.6.6 पश्चिम भारत के शक-*क्षत्रप*

14.6.7 सातवाहन वंश

14.7 मौर्योत्तरकाल : अर्थव्यवस्था और समाज

14.8 सारांश

14.9 शब्दावली

14.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.11 संदर्भ ग्रंथ

14.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जानेंगे:

- मौर्यकालीन प्रशासन व्यवस्था के पुनर्निर्माण हेतु स्रोतों के बारे में जानकारी;
- मौर्य साम्राज्य के प्रशासनिक तंत्र के बारे में विस्तृत जानकारी;

* डॉ. कविता गौर, सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, श्यामा प्रससाद मुखर्जी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

- प्रशासन के विभिन्न स्तरों के बारे में जानकारी;
- मौर्य साम्राज्य के बारे में विभिन्न धारणाएँ;
- मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था और समाज की जानकारी;
- पश्चिमोत्तर भारत में विभिन्न प्रकार के राज्यों जैसे इंडो-ग्रीक तथा कुषाणों के उद्भव की जानकारी;
- सातवाहन के समय दक्कन तथा ओडिशा क्षेत्रों में राज्य-निर्माण प्रक्रिया की जानकारी; और
- मौर्योत्तरकालीन अर्थव्यवस्था और समाज की जानकारी।

14.1 प्रस्तावना

भारतीय उपमहाद्वीप में मौर्यकाल प्रथम साम्राज्य बनने का साक्षी था। 'साम्राज्य' शब्द का अर्थ उस विशाल क्षेत्र से है जिसकी कमान मौर्य सम्राटों के हाथों में थी। इसमें विभिन्न जातीय समूहों, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों तथा सांस्कृतिक विविधता वाले क्षेत्र शामिल थे। साथ ही विभिन्न धार्मिक और भाषाई पृष्ठभूमि के लोगों को भी एक दायरे में लाया गया था (चक्रवर्ती 2013: 131)। मौर्य शासकों द्वारा अपने समय के विशाल क्षेत्र पर शासन करने की ज़िम्मेदारी साम्राज़्य को परिभाषित करती थी। मौर्यकालीन इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए प्राथमिक स्रोतों में विविध साहित्यिक और पुरातात्विक स्रोत उपलब्ध हैं। मौर्य साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था पर बात करने से पहले इसकी स्थापना और अवधि पर एक नज़र डाल लेनी चाहिए।

14.2 मौर्य साम्राज्य का आधार और शुरुआत

चंद्रगुप्त मौर्य ने नंद वंश के अंतिम शासक धनानंद को हराकर 321 बी.सी.ई. में मौर्य साम्राज़्य की स्थापना की।

ऐसा माना जाता है कि प्रभावशाली *ब्राह्मण* कौटिल्य की मदद से चंद्रगुप्त मौर्य ने नंदों को पराजित किया तथा उनसे पाटलिपुत्र का सिंहासन छीन लिया। उन्होंने सिंधु, गंगा के मैदानों तथा उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों पर अधिकार कर मौर्य साम्राज़्य की नींव रखी। चंद्रगुप्त मौर्य के बाद बिंदुसार ने 321 से 273 बी.सी.ई. तक शासन किया। उसने दक्कन पर नई विजय प्राप्त की।

बिंदुसार का पुत्र, अशोक 273 बी.सी.ई. के आस-पास सिंहासन पर बैठा। वह कई कारणों से मौर्य साम्राज्य का महान शासक था। बिंदुसार की मृत्यु के समय मौर्य साम्राज्य कलिंग को छोड़कर पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैल गया था। चंद्रगुप्त मौर्य ने क्षेत्रों पर अधिकार कर मौर्य साम्राज़्य की भौगोलिक सीमाओं का विस्तार किया था। लेकिन *धम्म* नीति के ज़रिये विविध क्षेत्रों को एकजुट करने का श्रेय अशोक को दिया जाता है। *पुराणों* के अनुसार मौर्यों का शासन काल 137 वर्ष तक रहा। भारतीय इतिहास में मौर्य युग चौथी शताब्दी बी.सी.ई. के उत्तरार्ध से लेकर दूसरी शताब्दी बी.सी.ई. की प्रथम तिमाही तक रहा (चक्रवर्ती 2013: 131)। इस अवधि ने भारतीय इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

अनेक विद्वानों ने विभिन्न स्रोतों के आधार पर मौर्यों की उत्पत्ति तथा जाति पर बहस की है। उदाहरण के लिए, ब्राह्मणवादी स्रोतों के अनुसार वे *शूद्र* तथा विधर्मी थे, संभवतः इसलिए प्रत्येक राजा अलग-अलग विधर्मी संप्रदाय का संरक्षक था (थापर 2002: 176)। एक अन्य स्रोत *मुद्राराक्षस* से पता चलता है कि चंद्रगुप्त की माँ एक गुलाम महिला थीं तथा उनका नाम मुरा था (चक्रवर्ती 2013: 121)। श्रीलंका के बौद्ध ग्रंथ *महावंश* में उल्लेख है कि चंद्रगुप्त मौर्य का जन्म खत्तिय (*क्षत्रिय*) परिवार में हुआ था। 12वीं शताब्दी के जैन ग्रंथ *परिशिष्टपर्व* में चंद्रगुप्त

को *मोर-रक्षक* (*मयूर-पोषक*) का पौत्र बताया गया है। उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि मौर्य शासक शाही क्षत्रिय से संबंधित नहीं थे। हालांकि, बौद्ध ग्रंथ *महावंश* मौर्य शासकों की राजसी स्थिति पर प्रकाश डालता है। संभवतः इसके पीछे का कारण अशोक का बौद्धधर्म के साथ जुड़ाव रहा होगा।

14.3 प्रशासन तंत्र

मौर्य साम्राज्य का प्रशासनिक तंत्र कुशल था। आइए, इसके बारे में जानकारी प्राप्त करें।

14.3.1 स्रोत

निःसंदेह, अशोक उस विशाल साम्राज़्य को मज़बूत बनाने में कामयाब रहा जिसकी नींव चंद्रगुप्त मौर्य ने रखी थी। इतने विशाल साम्राज़्य का संचालन उस समय की कुशल प्रशासनिक व्यवस्था के कारण ही संभव हो पाया था। मौर्य प्रशासन की प्रकृति पर प्रकाश डालने वाले मुख्य स्रोत इस प्रकार हैः

i) कौटिल्य द्वारा लिखित *अर्थशास्त्र*

ii) मेगस्थनीज़ द्वारा लिखित *इंडिका* के कुछ अंश

iii) अशोक के शिलालेख

अर्थशास्त्र पहला अभिलेखीय ग्रंथ है, जिसमें राज्य[1] और उसके कार्यों को परिभाषित किया गया है। यह कौटिल्य अथवा चाणक्य द्वारा लिखित है जिसे चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री के रूप में जाना जाता है। इस बात पर बहस होती है कि राजनीति का यह ग्रंथ मौर्यकालीन राज्य की कार्य-प्रणाली के बारे में है अथवा एक आदर्श राज्य के बारे में है। ट्रॉटमैन के अध्ययनों से साबित होता है कि ग्रंथ का शुरुआती भाग तीसरी सदी बी.सी.ई. के मौर्यकालीन प्रशासनिक विभागों से संबंधित है। *अर्थशास्त्र* सिर्फ़ एक ही लेखक का कार्य नहीं जान पड़ता (चक्रवर्ती 2013ः 118)। इसमें 15 खंड हैं। सन् 1905 में आर. रामाशास्त्री ने इसकी खोज की थी। इसमें राजा तथा उसके मंत्रिपरिषद और राज्य के अधिकारियों के कर्तव्यों का उल्लेख है। यह ग्रंथ नागरिक और आपराधिक कानूनों के साथ-साथ विदेशी कूटनीति पर भी प्रकाश डालता है। इस स्रोत के साथ समस्या यह है कि यह एक सैद्धांतिक ग्रंथ है और इसका एक हिस्सा मौर्य काल में लिखा गया था। इसलिए कई लोग यह मानते हैं कि यह मौर्यकालीन स्थितियों को पूरी तरह नहीं दिखाता है।

दूसरा स्रोत *इंडिका* मेगस्थनीज़ की यात्राओं और अनुभवों पर आधारित है। वह अरकोशिया के सेल्यूकस निकेटर का प्रतिनिधि था और चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में एक यूनानी राजदूत के रूप में आया था (सिंह 2009ः 324)। यह ग्रीक स्रोत हमें खंडों में मिलता है जिसे बाद के लेखकों जैसे डायोडोरस, स्ट्रैबो और एरियन ने संरक्षित किया था। यह सांगठनिक आधार पर नगर प्रशासन और सामाजिक क्षेत्रों का विस्तृत विवरण देता है। रोमिला थापर बताती हैं कि मेगस्थनीज़ ने पश्चिम एशिया के सेल्यूसिड क्षेत्रों के आधार पर भारत की कल्पना की थी (चक्रवर्ती 2013ः 117)। उपिंदर सिंह इस पर प्रकाश डालती हैं कि खोए हुए ग्रंथ के अंशों के विभिन्न संस्करणों की जानकारी हमें डायोडोरस, स्ट्रैबो और एरियन के कार्यों के माध्यम से मिलती है (सिंह 2009ः 340)।

मौर्य प्रशासन पर प्रकाश डालने वाले सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्रोत अशोक के शिलालेख हैं। मोटे तौर पर ये दो श्रेणियों में विभाजित हैं – चौदह शिलालेख तथा छह स्तंभ लेख।

[1] 'राज्य' शब्द का तात्पर्य अधिशेष उत्पन्न करने में सक्षम, संसाधन-आधार के अस्तित्व और वर्चस्व और अधीनता के सम्बन्धों की संरचना के अस्तित्व से है।

शिलालेखों और स्तंभ लेखों के ये समूह मामूली बदलावों के साथ विभिन्न स्थानों पर स्थित हैं। अशोक के कई छोटे शिलालेख, स्तंभ लेख और गुफा शिलालेख भी हैं (सिंह 2009: 328)। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि ये शिलालेख एक राजा के रूप में अशोक के विचारों को व्यक्त करते हैं तथा मौर्यकाल के समकालीन हैं। बहरहाल, ये मौर्य प्रशासन के बारे में प्रासंगिक जानकारी भी देते हैं।

आइए, अब हम इन स्रोतों के माध्यम से मौर्य प्रशासन के कार्यों पर एक नजर डालते हैं।

अर्थशास्त्र राज्य के सात प्रमुख अंगों ("सप्तांग राज्य") के बारे में बताता है। वे इस प्रकार हैं – *स्वामी* (राजा), *अमात्य* (मंत्री), *जनपद* (क्षेत्र और जनता), *दुर्ग* (किलेबंद राजधानी), *कोष* (कोषागार), *दंड* (न्याय), *मित्र* (सहयोगी) (सिंह 2009: 341)

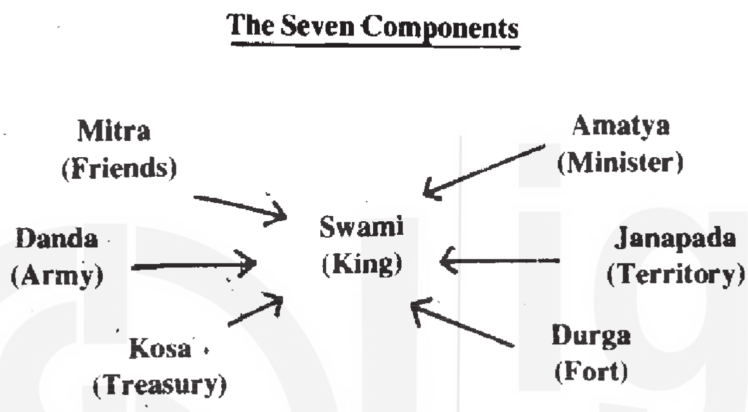

स्रोतः ई.एच.आई.-02, खंड-5, इकाई-20

14.3.2 राज्य शासन

मौर्य राज्य में राजा एक निर्णायक व्यक्ति था। उसे *वर्णाश्रम धर्म* का संरक्षण करने वाला बताया गया है (*अर्थशास्त्र* 2.1.26)। *अर्थशास्त्र* में राजा द्वारा प्रजा के प्रति पैतृक नज़रिये को भी उभारा गया है। इसमें कहा गया है कि राजा की खुशी प्रजा की खुशी पर और राजा का लाभ प्रजा को लाभ देने में निहित था (*अर्थशास्त्र* 1.19.34)। इस निदेशात्मक ग्रंथ में राजा के दैनिक कार्यों को भी निर्धारित किया गया है (*अर्थशास्त्र* 1.19.16)। मेगस्थनीज़ अपने लेखों में राजा के दैनिक कार्यों की व्यस्तता का वर्णन करता है। वह बताता है कि चंद्रगुप्त अपने विश्राम के समय भी आधिकारिक मामलों का संचालन करते थे (चक्रवर्ती 2013: 133)। अशोक के शिलालेखों में भी राज्य मामलों के महत्व पर बल दिया गया है। उसमें से एक में कहा गया है कि यदि राजा अपने आंतरिक कक्ष में हो, तो भी उसे सभी महत्वपूर्ण आधिकारिक मामलों के बारे में सूचित किया जाना चाहिए (शिलालेख VI)।

अर्थशास्त्र प्रशासन के सभी पहलुओं जैसे मंत्रियों की नियुक्ति और निष्कासन, राजकोष की सुरक्षा, लोगों के कल्याण के लिए गतिविधियों और अपराधों के लिए दंड के प्रावधानों का अंतिम अधिकार राजा को देता है। वह इन मामलों का निर्धारण करता है। यद्यपि अशोक के पहले और दूसरे शिलालेखों में प्रजा के प्रति राजा के पैतृक रवैए को रेखांकित किया गया है फिर भी सीमा-क्षेत्रों पर रहने वाले लोगों के प्रति एक निश्चित आधिकारिक तत्व दिखाई देता है (सिंह 2009: 343)[2]। आठवें शिलालेख से पता चलता है कि *देवानामपिय* (देवताओं को

---

[2] राजा यह चेतावनी देता है कि सीमावर्ती क्षेत्रों के लोगों के लिए सभी प्रकार के अपराधों को माफ नहीं किया जाएगा (सिंह 2009: 343)।

प्रिय) की उपाधि केवल अशोक तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि इसे मौर्य वंश के शासकों की पारंपरिक राजवंशीय उपाधि के रूप में जाना जाता था (चक्रवर्ती 2013: 126)।

14.3.3 *अमात्य*

अर्थशास्त्र के अनुसार किसी भी राज्य का कार्य बिना सहायक के नहीं चल सकता; इसलिए *अमात्य* नियुक्त किए गए। उन्हें राजा के रथ का पहिया कहा जाता है। *अमात्य* एक व्यापक शब्द है जिसमें उच्च स्तर के अधिकारी, परामर्शदाता और विभागों के कार्यकारी प्रमुख शामिल थे। उच्च स्तर के इन अधिकारियों को छल के विशेष परीक्षण द्वारा चुना जाता था जिसमें यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनके पद कितने अनिश्चित थे। दूसरी ओर, *मंत्री* एक विशिष्ट शब्द था जो राजा के सलाहकारों और पार्षदों के लिए प्रयुक्त होता था (सिंह 2009: 343)। इसमें ऐसी *मंत्रिपरिषद* का भी उल्लेख मिलता है जिसमें विभिन्न विभागों के प्रमुख विद्यमान थे। अशोक के तीसरे शिलालेख में परिषद शब्द कुछ निश्चित कार्यों को पूरा करने वाले अधिकारी, *युक्त,* के रूप में बताया गया है। इसके अलावा, छठवें शिलालेख में बताया गया है कि परिषद के सदस्यों के बीच विवाद के मामले में राजा को तुरंत सूचित किया जाना चाहिए (सिंह 2009: 343)। यह तथ्य इस बात को दर्शाता है कि अंतिम शक्ति राजा के पास निहित थी और *मंत्रिपरिषद* की प्राथमिक भूमिका सलाहकार की थी। दिलचस्प है कि मेगस्थनीज़ समाज को सात वर्गों में वर्गीकरण करते हुए उन सलाहकारों और मूल्यांकनकर्ताओं के बारे में बताता है जो संख्या में कम थे और प्रशासन में सर्वोच्च स्थान रखते थे (चक्रवर्ती 2013: 134)। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि शीर्ष स्तर पर प्रशासन का संचालन मंत्रियों की तुलना में उच्च स्तरीय अधिकारियों (*अमात्य*) द्वारा किया जाता था।

अशोक के शिलालेखों के अनुसार *महामात्रों* को सर्वोच्च अधिकारियों के रूप में जाना जाता था। विभिन्न प्रकार के *महामात्रों* का उल्लेख अशोक के शिलालेखों में मिलता है। वे इस प्रकार हैं -

- *अंत-महामात्र* : सीमांत क्षेत्रों के प्रभारी के रूप में,
- *इतिझक्क-महामात्र* : महिला कल्याण के लिए नियुक्त
- *नगलवियोहालक-महामात्र* : नगर प्रशासन के प्रभारी के रूप में, और
- *धम्म-महामात्र* : अशोक की धम्म नीति के प्रचार के लिए नियुक्त विशेष अधिकारी के रूप में (चक्रवर्ती 2013: 135)।

14.3.4 सैन्य प्रशासन

सेना राज्य की दूसरी प्रमुख अंग थी। मौर्य साम्राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों को बनाए रखने के लिए एक शक्तिशाली सशस्त्र बल की आवश्यकता थी। किलेबंद राजधानी (*दुर्ग*) केवल सेना के साथ ही संभव थी। इस काल के सैन्य प्रशासन के विवरण पर एक नजर डालते हैं। ग्रीक स्रोतों से पता चलता है कि सैंड्रोकोटस (चंद्रगुप्त) के पास अपने शासनकाल के दौरान एक विशाल क्षेत्र था जो 600,000 सैनिकों वाली उनकी विशाल सेना के कारण संभव हुआ था। यद्यपि यह सेना की संख्यात्मक शक्ति एक असंभावित आँकड़ा हो सकती है, फिर भी यह इंगित करता है कि मौर्य राज्य के पास विशाल जनशक्ति थी। अशोक द्वारा कलिंग पर विजय मौर्यों की भव्य सेना के बारे में ही बताता है। यूनानी ग्रंथों के अनुसार सैन्य प्रशासन का संचालन निम्नलिखित छह मंडलों द्वारा किया जाता था। प्रत्येक मंडल में पाँच सदस्य होते थे:

- पहला मंडल नौसेना मामलों से संबंधित था,

- दूसरा मंडल बैलगाड़ी के द्वारा सेना की देखभाल और रसदों की आपूर्ति से संबंधित था,
- तीसरा मंडल पैदल सेना के प्रभारी का था,
- चौथा मंडल घुड़सवार सेना के प्रमुख का था,
- पांचवाँ मंडल रथों के प्रभारी का था,
- छठा मंडल हाथी सैन्य दल के प्रभारी का था।

इसलिए ग्रीक स्रोतों ने समितियों के गठन के माध्यम से सैन्य प्रशासन पर प्रकाश डाला है। *अर्थशास्त्र* सशस्त्र बलों की विभिन्न इकाइयों को विभिन्न विभागाध्यक्षों (*अध्यक्ष*) के अधीन रखता है। उदाहरण के लिए:

- *नवाध्यक्ष* नौसेना की गतिविधियों के पर्यवेक्षक के रूप में,
- *गोध्यक्ष* बैलगाड़ी के प्रबंधन के लिए,
- *पत्याध्यक्ष* पैदल सेना के प्रभारी के रूप में,
- *रथाध्यक्ष* रथों के प्रभारी के रूप में,
- *हस्ताध्यक्ष* हाथी दल के प्रभारी के रूप में।

इस प्रकार हमने देखा कि ग्रीक स्रोत और *अर्थशास्त्र* दोनों सेना की संरचना में अलग-अलग इकाइयों की बात करते हैं।

ग्रंथ में सेना के प्रभारी के रूप में *सेनापति* का उल्लेख है जिसका वार्षिक वेतन 48,000 पण था। यहाँ मौर्य सेना के *सेनापति* का ऐतिहासिक संदर्भ भी मिलता है। पुष्यमित्र शुंग अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ के *सेनापति* थे (चक्रवर्ती 2013: 136)। इसके अलावा, हथियारों के रखरखाव तथा देखभाल करने के लिए एक अलग विभाग का उल्लेख भी है जिसके प्रमुख को *आयुद्धागाराध्यक्ष* के रूप में जाना जाता था। इस बात पर संदेह है कि क्या मौर्य सेना ने नौसेना बनाए रखी थी अथवा नहीं। क्योंकि ग्रंथ के *नवाध्यक्ष* खंड में समुद्री जहाजों की नहीं, सिर्फ़ नदी के नौकाओं के बारे में जानकारी मिलती है। कौटिल्य इस बात को स्वीकार करता है कि युद्ध बलों में वनवासियों (*अरण्य वासिन / वन वासिन*) को नियुक्त किया जाता था (चक्रवर्ती 2013: 136)।

14.3.5 गुप्तचर विभाग

एक अन्य महत्वपूर्ण विभाग जासूसी अथवा गुप्तचर विभाग था जो सशस्त्र बलों से संबंधित था। *अर्थशास्त्र* में एक स्थापित एवं विस्तृत गुप्तचर प्रणाली का विवरण मिलता है। यह गुप्तचरों का विस्तृत विवरण देता है। मोटे तौर पर वे दो भागों में विभाजित थे:

- स्थिर गुप्तचर (समस्थ),
- गतिशील गुप्तचर (संचार)

गुप्त सेवाओं के प्रमुख को *समाहर्त* के रूप में जाना जाता था जिसका कार्य राजस्व का संग्रह करना था। कौटिल्य के अनुसार सूचनाओं के सत्यापन के लिए, गुप्तचरों द्वारा दी गई जानकारी को गतिशील गुप्तचरों द्वारा एकत्रित कर स्थिर गुप्तचर के पास भेजा जाता था। फिर वहाँ से गुप्तचर सेवाओं के प्रमुख के पास भेजा जाता था (चक्रवर्ती 2013: 137)। गुप्तचरों के मुख्य कार्य इस प्रकार हैं:

i) मंत्रियों पर नज़र रखना,

ii) सरकारी अधिकारियों पर रिपोर्ट तैयार करना,

iii) नागरिकों की भावनाओं की जानकारी जुटाना,

iv) विदेशी शासकों के रहस्य जानना।

इन गुप्तचरों को संन्यासियों, छात्रों, गृहस्वामियों आदि तरह-तरह के भेष बदलने पड़ते थे। अशोक के शिलालेखों में *प्रतिवेदक* और *पुलेष्नी* शब्द का उल्लेख है, जो राजा को जनता के विचारों से अवगत कराते थे। *प्रतिवेदक* शब्द गुप्तचरों के लिए तथा *पुलेष्नी* शब्द का प्रयोग उच्चस्तरीय अधिकारियों के लिए किया जाता था (सिंह 2009ः 345)। क्लासिकल ग्रंथों में मौर्य प्रशासन में सबसे विश्वसनीय लोगों के लिए *एपिस्कोपई* शब्द का भी उल्लेख मिलता है। इस शब्द का प्रयोग मौर्य क्षेत्र के गुप्तचरों के लिए किया जाता था (चक्रवर्ती 2013ः 137)।

14.3.6 राजस्व प्रशासन

विभिन्न स्तर के प्रशासनिक अधिकारियों के रखरखाव हेतु राज्य के संसाधनों की जरूरत होती थी। इसलिए, राजस्व प्रशासन (*कोष*) *अर्थशास्त्र* में *सप्तांग राज्य* का अनिवार्य अंग माना जाता है। ग्रंथ में *समाहर्त* का उल्लेख राजस्व के मुख्य संग्रहकर्ता और खातों को बनाए रखने के प्रभारी के रूप में देखा गया है। *समनिधातृ* को शाही भंडारों का कोषाध्यक्ष माना जाता है (सिंह 2009ः 344)। मुख्य संग्रहकर्ता राजस्व संग्रह के लिए नियुक्त इन सात प्रमुखों से को देखता थाः

i) किलेबंद शहरी क्षेत्र (*दुर्ग*),

ii) ग्रामीण क्षेत्र (*राष्ट्र*),

iii) अकट (*खानें*),

iv) सिंचाई परियोजनाएँ (*सेतु*),

v) वन (*वन*),

vi) चारागाह मैदान (*व्रज*), और

vii) व्यापार मार्ग (*वणिकपथ*)।

इन सभी संसाधनों के संग्रह हेतु अपने क्षेत्र होते थे। उदाहरण के लिए, शहरों ने जुर्माना, बिक्री कर (*शुल्क*), शराब की बिक्री पर उत्पाद *शुल्क*, अमीरों पर लगाया जाने वाला एक प्रकार का आयकर आदि के रूप में राजस्व एकत्र किया जाता था। *अर्थशास्त्र* में लगभग 22 करों के बारे में उल्लेख है जिन्हें शहरी क्षेत्र (*दुर्ग*) से एकत्र किया जाता था। ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाला राजस्व, राज्य के आय के रूप में शाही भूमि (*सीता*) से, काश्तकारों से भू-राजस्व (*भाग*), बागों पर *कर*, नौका *शुल्क* आदि लिया जाता था। चूँकि सभी खदानें राज्य के नियंत्रण में थीं, इसलिए खनिज संपदा राज्य के लिए आय का एक नियमित स्रोत था। सड़क या जल-मार्ग से यात्रा करने वाले व्यापारियों पर कर लगाया जाता था। निर्यात और आयात पर भी कर लगाया गया था। भूमि कर राजस्व का एक महत्वपूर्ण स्रोत था। मौर्य काल के *भाग* की दर कम से कम उपज का 1/6वाँ भाग थी। यह केवल *अर्थशास्त्र* में कहा गया है कि खेती करने वालों पर सिंचाई उपकर (*उदकभाग*) 1/5 से 1/3वें भाग तक लगाया जाता था। हालांकि, कुछ विद्वानों के अनुसार, यह संभव नहीं है कि मौर्यों ने किसानों पर यह कर लगाया था (चक्रवर्ती 2013ः 138)।

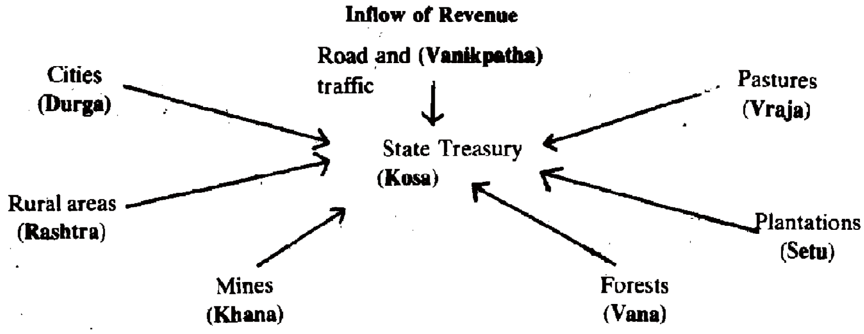

स्रोतः ई.एच.आई.-02, खंड-5, इकाई-20।

कुछ कर संग्रह राज्य के लोगों से सीधे लिए जाते थे। उदाहरण के लिए, जुआरियों को अपनी जीत का 5 प्रतिशत भाग राज्य को देना पड़ता था तथा व्यापारियों को अपने बाटों को राज्य के अधिकारियों द्वारा प्रमाणित कराने पर भुगतान करना पड़ता था। आयुद्ध उद्योग और नमक व्यापार पर राज्य का नियंत्रण था जिससे राजस्व में वृद्धि हुई। राज्य को आपातकाल में भी इन पर कर लगाने का अधिकार दिया गया थाः

- किसानों,
- व्यापारियों,
- कारीगर, और
- यहाँ तक कि वेश्याओं पर भी।

राज्य के राजस्व को इकट्ठा करने, विनियमित करने और प्रबंधित करने के लिए विभिन्न विभाग थे। *अर्थशास्त्र* का विवरण इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि उस समय की अर्थव्यवस्था में राज्य ने एक सक्रिय भूमिका निभाई थी। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि राजस्व संग्रह में गैर-कृषि कार्यों जैसे वेश्यावृत्ति के पेशे को भी महत्व दिया गया था।

अधिकांश राजस्व संग्रह राज्य के खजाने में जाता था तथा व्यय के रूप में उसे खर्च भी किया जाता था। इसे हम एक प्रवाह संचित्र की मदद से समझ सकते हैं -

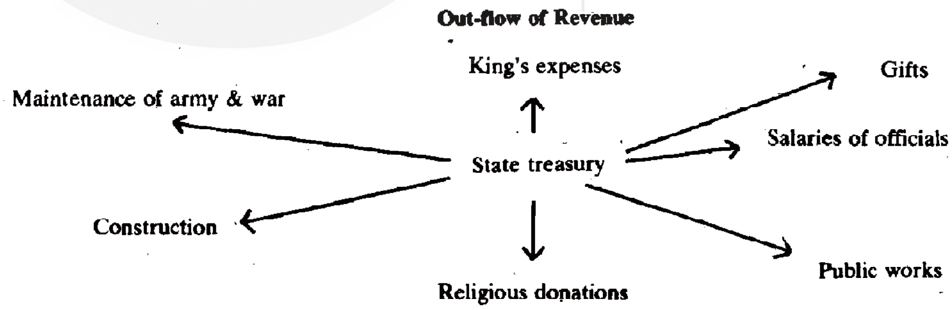

स्रोतः ई.एच.आई.-02, खंड-5, इकाई-20।

यह आँकड़ा बताता है कि राज्य के राजस्व का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता था। राजस्व का बड़ा हिस्सा सशस्त्र बलों के रखरखाव, राज्य के अधिकारियों के वेतन का भुगतान और राजा के व्यक्तिगत खर्च में उपयोग किया जाता था। राज्य धार्मिक गतिविधियों को बढ़ावा देने और उपहार देने के लिए भी एक बड़ा हिस्सा खर्च करता था। जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, अशोक ने *धम्म* के प्रचार हेतु *धम्ममहामात्रों* का विशेष वर्ग बनाया था। *दिव्यवदान* ग्रंथ इस तथ्य को प्रस्तुत करता है कि अशोक ने अपने पुत्र महिंदा और बेटी

संघमित्रा को श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा था। इसके अलावा, शिलालेखों में लिखा गया कि उन्होंने लुम्बिनी के गांवों की कृषि उपज के करों को घटाकर 1/8 कर दिया, क्योंकि लुम्बिनी बुद्ध का जन्मस्थान था (चक्रवर्ती 2013: 138)। लोक कल्याणकारी गतिविधियों के प्रति आकर्षण अशोक के शिलालेखों के साथ-साथ *अर्थशास्त्र* में भी देखने को मिलता है। जैसे, रुद्रदामन के शिलालेख में (दूसरी शताब्दी सी.ई. के मध्य), चंद्रगुप्त के समय में सुदर्शन नामक एक झील (तड़ग) के निर्माण का उल्लेख है। इसे पानी की आपूर्ति के लिए बनाया गया था। विभिन्न प्रकार के चिकित्सकों के कई संदर्भ मिलते हैं। जैसे, सामान्य चिकित्सक (*चिकित्सक*), दाई (*गर्भव्याधि*) आदि। अशोक के शिलालेखों से हम जानते हैं कि चिकित्सा उपचार और दवाएँ मनुष्यों और जानवरों दोनों के लिए उपलब्ध थी। *अर्थशास्त्र* में उल्लेख है कि राजा को अनाथ, बूढ़ी महिलाओं आदि की देखभाल करनी चाहिए। हम निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते कि मौर्य शासन में इन सबका कहाँ तक पालन किया गया था। ग्रंथ में सार्वजनिक कार्यों का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू – सड़कों का निर्माण, मरम्मत और सराय खोलने के बारे में भी बताया गया है।

14.3.7 न्याय व्यवस्था

सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने, प्रशासनिक व्यवस्था के सुचारू संचालन और राज्य के राजस्व के उचित उपयोग हेतु एक सुव्यवस्थित कानून का होना अनिवार्य है। *अर्थशास्त्र* में *दंड*, प्रशासन का छठा अंग है और *अर्थशास्त्र* में बल अथवा न्याय के रूप में जाना जाता था। यह ग्रंथ न्याय व्यवस्था पर विस्तृत चर्चा करता है। न्यायाधीशों को *धर्मस्थ* और *प्रादेश्त्री* कहा जाता था। वे अपराधियों के दमन के लिए जिम्मेदार थे (सिंह 2009: 347)। राजा धर्म का पालन करने वाला था और सर्वोच्च न्यायिक शक्ति रखता था। *अर्थशास्त्र* में विभिन्न अपराधों के लिए दंड की सूची दी गई है। इनमें विवाह कानूनों के उल्लंघन, तलाक, हत्या, मिलावट, गलत माप-तौल आदि शामिल हैं। कानून के अपराधियों तथा विभिन्न स्तरों पर विवादों को निपटारे के लिए अलग-अलग अदालतें थीं। *अर्थशास्त्र* में दो प्रकार के अदालतों के बारे में उल्लेख हैः

- *धर्मास्थीय* वे न्यायालय थे जिसमें व्यक्तिगत विवादों का फैसला किया जाता था, और
- *कंटकशोधन* वे न्यायलय थे, जिनमें व्यक्तियों और राज्य से संबंधित मामलों पर फैसला होता था।

उदाहरण के लिए, पहले प्रकार की अदालतें *स्त्रीधन* (पत्नी के धन) या विवाह आदि के विवादों से संबंधित मुद्दों को सुलझाती थी; और दूसरी प्रकार की अदालतें मज़दूरों की मज़दूरी, हत्या आदि का निपटारा करती थी। सजा के लिए जुर्माने से लेकर अंगों के काटने तथा मृत्युदंड तक का प्रावधान था। मेगस्थनीज़ के अनुसार मौर्यकालीन भारत में अपराध की घटना बहुत अधिक नहीं होती थी। लेकिन *अर्थशास्त्र* में उल्लिखित दंडों की सीमा बताती है कि मौर्य समाज के ताने-बाने में कानूनों और अपराध का टूटना असामान्य नहीं था। इससे *अर्थशास्त्र* में विस्तृत गंभीर दंड संहिता का उल्लेख हो सकता है। *अर्थशास्त्र* में दंड *वर्ण* पदानुक्रम पर आधारित होते थे, जिसका अर्थ है कि एक ही तरह के अपराध के लिए एक *ब्राह्मण* को *शूद्र* की तुलना में बहुत कम सजा दी जाती थी।

14.3.8 नगरीय प्रशासन

शहर प्रशासन पर एक नजर डालते हैं। मेगस्थनीज़ ने शहर प्रशासन में मौर्य शासकों के केंद्र पाटलिपुत्र का विशद वर्णन किया है शायद मौर्यों का शीर्ष केन्द्र। नगर प्रशासन के प्रभारी *अस्टिनोमोई* के नाम से जाने जाते थे। इस स्रोत में नगर परिषद को छह समितियों में विभाजित किया गया है, प्रत्येक समिति में पाँच सदस्य होते थेः

1) पहली समिति, उद्योग और शिल्प की देखभाल करती थी। इसके कार्यों में ऐसे केंद्रों का निरीक्षण, मजदूरी तय करना आदि शामिल थे।

2) दूसरी समिति, विदेशियों की देखभाल करती थी। इसके कार्यों में उनके भोजन, रहने और सुरक्षा आदि की व्यवस्था करना शामिल था।

3) तीसरी समिति, जन्म और मृत्यु का पंजीकरण करती थी।

4) चौथी समिति, व्यापार और वाणिज्य की देखभाल करती थी। इसके कार्यों में माप-तौल और उपायों का निरीक्षण, बाजार को नियंत्रित करना, आदि शामिल थे।

5) पाँचवीं समिति, विनिर्मित वस्तुओं का निरीक्षण करती थी, उनकी बिक्री के लिए प्रावधान किए गए थे। नई और पुरानी वस्तुओं में पहचान पर सख्त निगरानी रखी जाती थी।

6) छठी समिति, बेची गई वस्तुओं पर कर एकत्र करने वाली थी।

इन समितियों ने शहर प्रशासन की गतिविधियों को परिभाषित किया। *अर्थशास्त्र* में शहर की योजना और प्रशासनिक प्रमुख के बारे में जानकारी मिलती है। जैसे, इसमें उल्लेख है कि नगर प्रशासन के प्रमुख को *नगरक* कहा जाता था। *स्थानिक* और *गोप* उसके अधीनस्थ अधिकारी थे। दिलचस्प है कि, ग्रंथ के अनुसार चौथी समिति के कार्यों का प्रदर्शन *पणाध्यक्ष* द्वारा किया जाता था। करों का संग्रह (छठी समिति) *शुल्काध्यक्ष* की जिम्मेदारी थी और जन्म और मृत्यु का पंजीकरण *गोप* करता था। इनके अलावा, अधिकारियों का एक दल होता था, जो कार्यों को विस्तृत रूप से परिभाषित करता था।

उदाहरण के लिए:

- *बंधनगाराध्यक्ष*, जेलों की देखभाल करते थे।
- *रक्षी* यानी पुलिस, लोगों की सुरक्षा की देखरेख करते थे।
- केंद्रों में काम करने वाले जहाँ माल का निर्माण किया जाता था, उसकी देखरेख *लोहाध्यक्ष, सौवर्णिक* आदि जैसे अधीक्षक करते थे।

अर्थशास्त्र शहर प्रशासन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को भी दर्शाता है। अशोक के शिलालेखों में वर्णित *नगलवियोहालक-महामात्र* निश्चित रूप से नगर प्रशासन से जुड़े हुए थे (सिंह 2009: 345)। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि शहर प्रशासन, जैसा कि इन स्रोतों में दिखाया गया है, विस्तृत और सुनियोजित था।

14.3.9 प्रांतीय प्रशासन

विशाल मौर्य साम्राज्य का संचालन सिर्फ़ मौर्यों की प्रशासनिक राजधानी पाटलिपुत्र या सर्वोच्च केंद्रों से ही नहीं हो सकता था। विशाल क्षेत्र को नियंत्रित करने के लिए प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन केंद्रों की भी आवश्यकता थी। प्रांतीय केंद्रों के प्रमुख राज्यपाल थे, जो शासक द्वारा नियुक्त किए जाते थे। राज्यपाल *महामात्यों* (अशोक के काल के दौरान *महामात्रों*) मंत्रि परिषद द्वारा निर्देशित एक सदस्य था। यह माना जाता है कि प्रांतीय स्तर पर मंत्रियों की परिषद न केवल राज्यपाल पर नियंत्रण रखती थी बल्कि, कई बार परिषद के राजा के साथ सीधे संबंध थे। अशोक के शिलालेख (धौली और जौगड़) में उल्लेख है कि तीन प्रांतीय राजधानियाँ – तोशली (पूर्व में), उज्जैन (पश्चिम में), और तक्षशिला (उत्तर में) (राजपरिवार से संबंध रखने वाले) *कुमार* के अधीन थीं। प्रथम शिलालेख में यह पता चलता है कि स्थानीय अधिकारियों को निरीक्षण के दौरे के आदेश जारी करने का निर्देश अशोक स्वयं देता है,

जबकि *कुमार* को इसके बारे में सूचित नहीं किया जाता था। इससे पता चलता है कि सभी *कुमार* अपने प्रांतीय केंद्रों को संचालित करने में एक समान सशक्त नहीं थे।

एक अन्य प्रांतीय राजधानी सु*वर्ण*गिरी (दक्षिण में) *आर्यपुत्र* के अधीन थी। *आर्यपुत्र* शब्द का तात्पर्य परिवार के सबसे बड़े पुत्र (पाणिनी की अष्टाध्यायी के अनुसार) से था। इसलिए, यहाँ *कुमार* की तुलना में *आर्यपुत्र* का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया जाता था। संभवतः, दक्षिण (सु*वर्ण*गिरि) के प्रांतीय केंद्र के समृद्ध संसाधन क्षेत्र को ज्येष्ठ पुत्र को सौंपा जाता था, जो सबसे बड़ा और जिम्मेदार होता था (चक्रवर्ती 2013: 139)।

प्रांत के भीतर कुछ क्षेत्रों को उन प्रशासकों द्वारा संचालित किया जाता था जो अपने क्षेत्रों के छोटे-मोटे शासक होते थे। ऐसा हम इसलिए कह सकते हैं क्योंकि रुद्रदमन के जूनागढ़ शिलालेख में अशोक के समय जूनागढ़ क्षेत्र के राज्यपाल के रूप में एक *यवन तुषास्प* का उल्लेख मिलता है। हालाँकि, उसी शिलालेख में यह भी उल्लेख मिलता है कि चंद्रगुप्त मौर्य के समय उस क्षेत्र के प्रतिनिधि एक *वैश्य* पुष्यगुप्त थे।

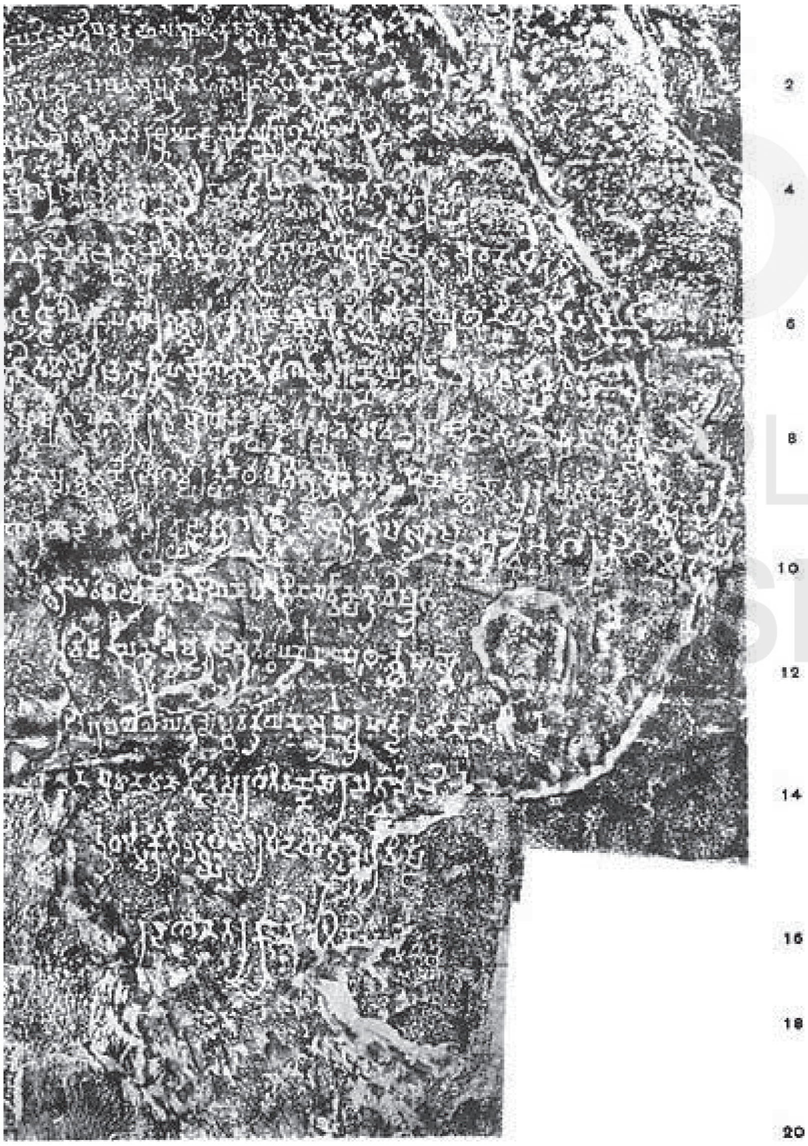

रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख। स्रोतः *एपिग्राफिया इंडिका, वॉल्यूम 8*। 1905 में आठवाँ प्रकाशन। श्रेयः जे एफ. फ्लीट। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Junagadh_inscription_of_Rudradaman_(portion).jpg).

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि इन राज्यपालों ने शाही राजकुमार के पद को नहीं अपनाया। इसके अलावा, *यवन* शब्द पश्चिम एशिया के लोगों के लिए प्रयुक्त होता था, जबकि तुषास्प

एक ईरानी नाम था। ये दोनों राजशाही वंश के बाहर के प्रतीत होते हैं (चक्रवर्ती 2013: 140)। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि मौर्य साम्राज्य में विभिन्न प्रकार के प्रांतीय अधिकारियों को विविध प्रशासनिक इकाइयाँ सौंपी गई थीं।

14.3.10 स्थानीय प्रशासन

अशोक के अभिलेखों में उल्लेख है कि प्रांतीय प्रशासन को जिला स्तर पर विभाजित किया गया था और इसके लिए *जनपद* और *अहार* का प्रयोग किया जाता था। जिला स्तर पर महत्वपूर्ण अधिकारी थे:

- *प्रादेशिक*
- *रज्जुक*
- *युक्त*

इन अधिकारियों को *धम्म* के बारे में लोगों को निर्देश देने और अन्य उद्देश्यों के लिए हर पाँच साल में दौरे पर जाना होता था (सिंह 2009: 344)। *प्रादेशिक* को जिले का समग्र प्रभारी माना जाता था। उनके अन्य कार्यों में शामिल था:

- भूमि का सर्वेक्षण और मूल्यांकन
- राजस्व का संग्रह
- कानून और व्यवस्था का रखरखाव

रज्जू शब्द का अर्थ *रस्सी* है। यहाँ रस्सी का उपयोग भूमि की माप के लिए किया जाता होगा। बोंगार्ड लेविन के अनुसार पूर्वोक्त शिलालेख में प्रयुक्त रज्जुक तथा मेगस्थनीज़ के लेख में उल्लिखित *एग्रोनोगोई* में समानता देखी जा सकती है। क्लासिकल स्रोत में उन्हें राजस्व मूल्यांकन हेतु भूमि की माप करने वाले के रूप में देखा जाता है (सिंह 2009: 344)। रज्जुक का ऐसा ही अर्थ पाली ग्रंथों में भी देखा जाता है जिसमें *रज्जुग्गहकमच्छ* शब्द का प्रयोग उस अधिकारी के लिए किया गया है जिसने रस्सी पकड़ी हुई है। क्षेत्र को मापने के लिए रस्सी को पकड़े हुए एक अधिकारी की भूमिका ऊपर वर्णित भूमिका के समान दिखाई देती है (चक्रवर्ती 2013: 141)। *युक्त* छोटे अधिकारी थे, जो अन्य दो अधिकारियों के सहायक सचिव होते थे।

कौटिल्य बताता है कि स्थानीय स्तर पर राजा एक मुख्यालय स्थापित करता था, जिसे *स्थानीय* कहा जाता था। इसमें 800 गाँव का एक *स्थानीय*, 400 गाँवों का एक *द्रोणमुख*, 200 गाँवों का एक *करवाटिका* और 10 गाँवों का एक *संग्रहण* शामिल था। गाँव प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी। *स्थानिक* जिले का प्रभारी होता था। पाँच से दस गाँवों के ऊपर एक *गोप* नियुक्त किया जाता था जो *स्थानिक* के अधीनस्थ अधिकारी था। *ग्रामिक* गाँव का मुखिया होता था (सिंह 2009: 344)। हालाँकि, यह पता लगाना संभव नहीं है कि *अर्थशास्त्र* जैसे सैद्धांतिक ग्रंथ में वर्णित स्थानीय प्रशासन व्यवहार में लाया गया था या नहीं।

मौर्य प्रशासन के पुनर्निर्माण के स्रोतों के लाभ के साथ-साथ कुछ सीमाएँ भी हैं। हालाँकि, इन स्रोतों के तुलनात्मक अध्ययन से मौर्य साम्राज्य के प्रशासनिक तंत्र के पुनर्गठन में मदद मिली है। यद्यपि यह ध्यान रखना चाहिए कि *अर्थशास्त्र* एक निर्देशात्मक ग्रंथ है। यह प्रशासन (वास्तविक मौर्य प्रशासन नहीं) की आदर्श योजना पर चर्चा करता है। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि इस तरह का ग्रंथ बिना किसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के नहीं लिखा गया होगा। अशोक के अभिलेख और मेगस्थनीज़ के लेखों की तुलना मौर्य राज्य की प्रकृति

को समझने में मदद करते हैं। अशोक के अभिलेख प्रशासनिक अधिकारियों और समय-समय पर दिए गए निर्देशों पर प्रकाश डालते हैं। मेगस्थनीज़ के लेख शहरी प्रशासन को एक विशेष दृष्टि से समझाते हैं। इन साक्ष्यों का सहसंबंध उन तत्वों को समझने में मदद करता है जिन्होंने मौर्य प्रणाली का गठन किया था।

14.4 मौर्य साम्राज्य की धारणाएँ

मौर्य राज्य के बारे में अलग-अलग धारणाएँ हैं। सबसे लोकप्रिय विचार यह है कि मौर्यों ने एक समान और उच्च केंद्रीकृत राज्य प्रणाली की स्थापना की (चक्रवर्ती 2013ः 133)। इसका अर्थ है कि साम्राज्य के सभी क्षेत्रों में जनता, उत्पादन और संसाधनों पर शाही नियंत्रण समान रूप से लागू किया गया था। हालाँकि आई. डब्ल्यू. मेबेट (1972) के लेखन में इसके विपरीत विचार दिखाई देता है। इन्होंने "*प्राचीन भारत में सत्य, मिथक और राजनीति*" नामक अपनी पुस्तक में केंद्रीकृत नियंत्रण के विचार पर सवाल उठाया है। इसके अलावा, जेरार्ड फ़ुसमैन ने कहा, "साम्राज्य और उस समय के संचार नेटवर्क की सीमा को देखते हुए मौर्य साम्राज्य संभवतः केंद्रीकृत नहीं हो सकता था" (सिंह 2009ः 340)।

केंद्रीकृत नियंत्रण विशाल साम्राज्य को एकीकृत बनाए रखता है और नियंत्रण के निर्देशों को साम्राज्य के सभी हिस्सों में समान रूप से लागू करता है। हालांकि, विभिन्न राजनीतिक संस्थान जैसे राजशाही और गणतंत्रात्मक राज्य *अर्थशास्त्र* में देखे जाते हैं। इसकी संभावना है कि केंद्रीकृत प्रशासनिक नियंत्रण विभिन्न जगहों के साथ-साथ तरह-तरह के अधिकारियों में भी अलग था। कुछ क्षेत्र आर्थिक रूप से उपजाऊ थे; उन क्षेत्रों से अधिकतम राजस्व निकालने के लिए उच्चस्तरीय अधिकारियों को वहाँ रखा जाता था। उदाहरण के लिए, विभिन्न प्रांतीय केंद्रों को मौर्य राज्य के विभिन्न अधिकारियों को आवंटित किया गया था। दूसरी ओर, अशोक की *धम्म* नीति में विविध संस्कृतियों में समरूपता प्राप्त करने का प्रयास देखा जा सकता है। इसे एक समान आचार संहिता के अंतर्गत विविध सांस्कृतिक प्रथाओं को समायोजित करने के लिए एक राजनीतिक और प्रशासनिक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया गया था। *अर्थशास्त्र* में वर्णित प्रावधानों के माध्यम से विविध अर्थव्यवस्थाओं को विनियमित करने का प्रयास भी दिखाई देता है। कराधान तंत्र विभिन्न आर्थिक गतिविधियों से संसाधनों के संग्रह के बारे में बताता है।

रोमिला थापर ने अपने पहले कार्य *अशोका एंड द डिक्लाइन ऑफ द मौर्याज़* (1961) (अशोक और मौर्यों का पतन) में मौर्य साम्राज्य को एक केंद्रीकृत तंत्र के तहत शासित बताया था। हालाँकि, बाद में, उन्होंने एक और कार्य *द मौर्याज रिविजिटेड* (1987) (मौर्यों का पुनरावलोकन) में अपने तर्कों को संशोधित किया और बताया कि साम्राज्य विभिन्न क्षेत्रों, विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं, राजनीति और सांस्कृतिक क्षेत्रों में विभाजित था। इसलिए उन्होंने बताया कि मौर्य काल में तीन स्तरीय प्रशासनिक संरचना – महानगरीय, केंद्रीय और सीमावर्ती – प्रचलित रही होगी। मगध एक महानगरीय राज्य था, जहाँ मौर्य शासक के प्रत्यक्ष शाही आदेश लागू किए गए थे। केंद्रीय क्षेत्रों में कोशल, वत्स, अवंती और गांधार शामिल थे जो या तो व्यापार के केंद्र थे या उन क्षेत्रों में आते थे, जहाँ राज्य प्रणाली अभी शुरू हुई थी। वे क्षेत्र जो पाटलिपुत्र से एक लंबी दूरी पर स्थित थे, वे उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती और प्रायद्वीपीय क्षेत्र, सीमावर्ती क्षेत्रों में आते थे। इन क्षेत्रों को उस रूप में देखा जा सकता है जहाँ राज्य प्रणाली शुरू नहीं हुई थी। इसलिए, यह देखा जा सकता है कि मौर्य प्रशासन को "केंद्रीकृत" या "विकेंद्रीकृत" के रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता। उसके शीर्ष स्तर पर केंद्रीय नियंत्रण था तथा सत्ता हस्तांतरण का कुछ हिस्सा प्रांत, जिला और ग्रामीण स्तर पर भी था। महानगरीय राज्य, केंद्र और सीमावर्ती क्षेत्रों के बीच विविध संबंध थे, जो केंद्र और दूर-दराज के क्षेत्रों से आने वाले संसाधनों पर आधारित थे। हालाँकि, *धम्म* नीति के माध्यम से राजनीतिक व्यवस्था को

एकरूपता देने की कोशिश की गई थी जो अशोक का एक प्रशासनिक उपकरण था (सिंह 2009: 341)। यह बताता है कि राज्य की अवधारणा केवल राजनीति या प्रशासनिक नियंत्रण तक संबंधित नहीं थी; आर्थिक और सामाजिक विचार भी मौर्य राज्य का पुनर्निर्माण कर रहे थे।

14.5 मौर्यकाल : अर्थव्यवस्था और समाज

उपरोक्त भाग में राजस्व प्रशासन पर चर्चा मौर्य काल की अर्थव्यवस्था से संबंधित महत्वपूर्ण मामलों पर भी प्रकाश डालती है। *अर्थशास्त्र* में उल्लेख है कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों, सिंचाई परियोजनाओं, खानों, वन क्षेत्रों और व्यापार मार्गों पर लगाए गए करों के माध्यम से राजस्व एकत्र किया जाता था। अतएव, इस सैद्धांतिक ग्रंथ में राज्य द्वारा अर्थव्यवस्था पर मज़बूत नियंत्रण दिखाई देता है। हालाँकि, वास्तविक परिदृश्य में यह कहाँ तक लागू था, यह बताना मुश्किल है। उत्तर भारत की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित थी। *अर्थशास्त्र* में राज्य की कृषि नीतियों (*जनपद* निवेश) के माध्यम से खेती के क्षेत्रों का विस्तार करने का प्रयास देखा गया है (चक्रवर्ती 2013: 151)। इसमें राज्य के स्वामित्व वाली भूमि (*सीता*) के अलावा निजी स्वामित्व वाली भूमि का भी उल्लेख मिलता है। निजी भूस्वामियों को अपना एक हिस्सा राज्य को कर के रूप में देना पड़ता था।

सिंचाई की सुविधाएँ कृषि उत्पादन के साथ जुड़ी हुई थीं। लोगों को सिंचाई की सुविधाएँ देने में राज्य और वैयक्तिक दोनों पहल देखी जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, मेगस्थनीज़ के लेखों से हमें पता चलता है कि ग्रामीण इलाकों में एक विशेष प्रभारी (*एग्रोनोमोई*) अधिकारी था, जो काश्तकारों को सिंचाई की सुविधा प्रदान करता था। *अर्थशास्त्र* में राज्य द्वारा दी गई दो प्रकार की सिंचाई परियोजनाओं के बारे में भी बताया गया है। एक जलीय परियोजना थी, जिसमें प्राकृतिक स्रोतों के माध्यम से जबकि दूसरा कृत्रिम साधनों के माध्यम से पानी दिया जाता था। दिलचस्प बात यह है कि ग्रंथ में सिंचाई सेवाओं का लाभ उठाने के लिए सिंचाई कर (*उदकभाग*) का भी उल्लेख है (चक्रवर्ती 2013: 152)। मौर्योत्तर शासक रुद्रदमन प्रथम के जूनागढ़ शिलालेख में उल्लेख है कि चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में राज्यपालों में से एक ने पश्चिमी भारत में गिरनार के पास एक नदी पर एक बांध का निर्माण किया था। उस बांध को सुदर्शन झील के रूप में जाना जाता है, जिसे उस क्षेत्र में पानी की आपूर्ति के लिए बनाया गया था (थापर 2002: 187)।

कौटिल्य अपनी पुस्तक में बताते हैं कि कपड़ा निर्माण राज्य द्वारा नियंत्रित एक दूसरा उद्योग था। इसमें उत्पादन, कर्मचारियों के विवरण और वेतन के बारे में स्पष्ट रूप से बताया गया है। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि कपड़ा निर्माण में महिला श्रमिकों को भी नियुक्त किया जाता था (चक्रवर्ती 2013: 154)। हालांकि, यह संभावना नहीं थी कि सभी कपड़ा उत्पादन राज्य की देखरेख में होता था। चूँकि पहले के समय में कपड़ा निर्माण को एक आर्थिक गतिविधि के रूप में देखा जाता था, इसलिए यह कहा जा सकता था कि वस्त्र निर्माण के लिए कार्यबल को व्यवस्थित करने का प्रयास *अर्थशास्त्र* में देखा गया होग।

इसी तरह, मौर्य काल के स्रोतों में व्यापार और वाणिज्य पर पर्यवेक्षण को देखा जा सकता है। ग्रीक स्रोतों में उल्लेख है कि शहर के अधिकारी शहरी मामलों की देखभाल करते थे जिनमें शामिल थे:

- निर्मित वस्तुओं का निरीक्षण,
- वस्तुओं की मात्रा और गुणवत्ता, और
- बेचे गए माल पर कर

अर्थशास्त्र में भी इस बात का जिक्र है कि *पण्याध्यक्ष,* यानि अधीक्षक व्यापारियों पर नजर रखते थे। अधीक्षक इन बातों की निगरानी रखते थे :

- बाजार में लाए गए सामान,
- जिस तरीके से माल लाया जाता था,
- लाभ की राशि, और
- विभिन्न वस्तुओं की मांग और कीमतों में बदलाव (चक्रवर्ती 2013ः 155)।

ग्रंथ में शहरी करों जैसे आयात और निर्यात किए गए सामान पर शुल्क का भी उल्लेख है। पुरातात्विक उत्खनन से संकेत मिलता है कि इस काल ने पहले की तरह कृषि और शहरी विस्तार की प्रक्रिया को देखा था। शहरी विकास ने शिल्प, व्यापार और समाज संगठन में विस्तार किया। महानगरीय क्षेत्र पाटलिपुत्र से लकड़ी के मौर्य महल और स्तंभनुमा हॉल के अवशेष मिले हैं। बड़ी संख्या में मुहरों की खोज से मौर्य काल के एक महत्वपूर्ण व्यापार केंद्र के रूप में ऊपरी गंगा घाटी में *भीटा* स्थल का पता चलता है। मथुरा क्षेत्र में विशेष शिल्प गतिविधियों जैसे पकी मिट्टी की वस्तुओं का शिल्प, तांबा और लोहे के काम करने, और मनके बनाने के साक्ष्य देखे गए हैं। इसी तरह, मिट्टी की ईंट की दीवारों, रिंग वेल और एक वृत्ताकार खत्री के मिलने से अतरंजीखेड़ा को एक शहरी केंद्र के रूप में देखा जाता है (सिंह 2009ः 336)। यहाँ कहा जा सकता है कि विभिन्न आर्थिक गतिविधियों से अधिकतम राजस्व निकालने के लिए *अर्थशास्त्र* में अर्थव्यवस्था पर राज्य के नियंत्रण पर ज़ोर दिया गया है।

स्रोत मौर्य काल में सामाजिक स्थितियों के बारे में भी बात करते हैं। मेगस्थनीज़ के अनुसार भारतीय समाज सात समूहों में विभाजित थाः

- दार्शनिक
- किसान
- सैनिक
- चरवाहा
- कारीगर
- मजिस्ट्रेट
- पार्षद

इन समूहों को जातियों के रूप में जाना गया तथा किसी को भी पेशे बदलने और अपने समूह से बाहर शादी करने की अनुमति नहीं थी (थापर 2002ः 190)। मेगस्थनीज़ ने सामाजिक समूहों को सामाजिक स्थिति के बजाय उनके व्यवसायों के संदर्भ में परिभाषित किया है। *अर्थशास्त्र* में ब्राह्मणवादी समाज को बढ़ावा दिया गया और *वर्ण* और *आश्रम* व्यवस्था के रखरखाव पर ज़ोर दिया गया। अशोक के शिलालेखों में असमान समाज की तस्वीर उभरती है, जिसमें ब्राह्मणों और कुलीनों को *आर्य,* दास और सेवकों को *दासभताका,* धनाढ्य व्यक्ति को *महत* और निम्न व्यक्ति को *खुदक* के रूप में जाना जाता था (चक्रवर्ती 2013ः 150)।

अर्थशास्त्र में उल्लेख है कि आदर्श विवाह *वर्ण* के भीतर होता है लेकिन गोत्र के बाहर, अर्थात् यहाँ अंतर्जातीय विवाह की प्रथा पर प्रकाश डाला गया है। अगर हम इलाहाबाद-कोसम रानी के अभिलेख को देखे तो कारुवकी अशोक की दूसरी रानी के रूप में उल्लेखित है। यह समाज में बहुविवाह की प्रथा पर प्रकाश डालता है। कारुवकी को रानी और राजकुमार की

माँ के रूप में दर्शाया गया है। यह बताता है कि रानी की पहचान परिवार के पुरुष सदस्यों के संबंध में उजागर होती है, जो पितृसत्तात्मक समाज की एक प्रमुख विशेषता है।

अर्थशास्त्र में महिलाओं द्वारा विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों के बारे में पता चलता है। वे शाही अंगरक्षकों और राज्य के जासूसों के रूप में कार्यरत थीं। गरीब महिलाएँ, विधवाएँ और वेश्याएँ अपने घरों के अंदर और बाहर कताई और बुनाई करती थीं। कौटिल्य वेश्यावृत्ति को पेशे के रूप देखते हैं। उस पेशे को संचालित करने के लिए *गणिकाध्यक्ष* को नियुक्त किया जाता था। अतएव इस ग्रंथ में राजस्व की उत्पत्ति के लिए सभी प्रकार की महिलाओं को दायरे में लाने की बात की गई है। राज्य की आर्थिक चिंताओं ने बड़े पैमाने पर सामाजिक समूहों और समाज के पुनर्गठन को प्रभावित किया।

बोध प्रश्न 1

1) मौर्य प्रशासन के पुनर्निर्माण के क्या स्रोत हैं?

....

....

....

....

....

2) क्या *अर्थशास्त्र* की रचना मौर्य प्रशासन में हुई थी? इसकी चर्चा करें।

....

....

....

....

....

3) मौर्यकालीन इतिहास के लिए अशोक के अभिलेख क्या *अर्थशास्त्र* से अधिक विश्वसनीय स्रोत हैं?

....

....

....

....

....

4) मौर्य साम्राज्य के शहर प्रशासन के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखें।

....

....

....

....

5) क्या मौर्य राज्य एक केन्द्रीकृत राज्य था? स्पष्ट करें। क्या *धम्म* राज्य का प्रशासनिक उपकरण था?

....

....

....

....

....

6) i) निम्नलिखित का उपयुक्त मिलान करें।

1. *नवाध्यक्ष* क. हाथी सैन्यदल का अध्यक्ष

2. *रथाध्यक्ष* ख. पैदल सेना का अध्यक्ष

3. *हस्ताध्यक्ष* ग. नवसेना का अध्यक्ष

4. *पताध्यक्ष* घ. रथों के अध्यक्ष

ii) निम्नलिखित का उपयुक्त मिलान करें।

1. *कोष* क. काश्तकारों से कर

2. *भाग* ख. गुप्तचर

3. *आयुद्धागाराध्यक्ष* ग. शहर प्रशासन के प्रभारी

4. *एस्टिनोमोई* घ. राजस्व प्रशासन

5. *समस्थ* ङ. आयुध उत्पादन इकाई के अध्यक्ष

7) निम्नलिखित दिए गए सही वाक्यों के सामने सही (✓) का तथा गलत वाक्यों के सामने गलत (×) का चिह्न लगाएँ:

i) *अर्थशास्त्र* में *धर्मास्थीय* का उल्लेख न्यायालय के रूप में मिलता है, जिसमें व्यक्तिगत विवादों से संबंधित मामलों का निपटारा किया जाता था। जबकि *कंटकशोधन* राज्य और व्यक्ति दोनों से संबंधित मामलों का निपटारा करते थे।

ii) ग्रामीण प्रशासन में *स्थानिक* और *गोप* को अधीनस्थ अधिकारियों के रूप में गिना जाता था।

iii) मेगस्थनीज़ के अनुसार, नगर *परिषद*, छह समितियों में विभाजित थी और प्रत्येक समिति में पाँच सदस्य होते थे।

iv) सभी प्रांतीय राजधानियों को शाही राजकुमार तथा *कुमार* के द्वारा नियंत्रित किया जाता था।

v) यूनानी स्रोतों में *एस्टोनोमोई* शब्द का प्रयोग ग्रामीण प्रशासन के अधिकारियों के लिए किया गया है।

14.6 मौर्योत्तरकालीन राज्य

श्रेय : PHG। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:SatavahanaMap.jpg)।

200 बी.सी.ई. से 300 सी.ई. के मध्य का काल शुरुआती इतिहासकारों के लिए संकटपूर्ण था। क्योंकि यहाँ विदेशी शासकों की उपस्थिति और भारतीय उपमहाद्वीप में बड़े क्षेत्रीय ढाँचे का अभाव था। हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि इस काल में व्यापक स्तर पर आर्थिक और सांस्कृतिक विकास हुआ था। इस काल में विभिन्न प्रकार के राज्यों तथा राजाओं को देखा गया। मध्य और पश्चिम एशिया की विदेशी जनजातियों ने उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में अपना राजनीतिक शासन स्थापित किया। दक्कन और ओडिशा क्षेत्र में राजतंत्र का उदय देखा गया। इसके साथ ही, उत्तरी और मध्य भारत में गैर-राजतंत्रीय समूहों का उदय भी हुआ था।

14.6.1 शुंग और खारवेल

मौर्य साम्राज्य के टूटने के बाद भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में कई राजतंत्रों का उदय हुआ। माना जाता है कि मौर्य सेना के सेनापति पुष्यमित्र ने अंतिम मौर्य राजा बृहद्रथ को मारकर शुंग वंश की स्थापना की थी। अधिकांश इतिहासकारों ने यह स्वीकार किया कि मौर्य शासन में बौद्ध धर्म के व्यापक संरक्षण के बाद ब्राह्मणवादी पुनरुत्थान हेतु शुंग साम्राज्य

का उद्‌भव हुआ। पुष्यमित्र की क्रूरता और बौद्ध धर्म के प्रति उसकी घृणा की कहानियाँ *दिव्यवदान* में उल्लिखित है (सिंह 2009ः 372)।

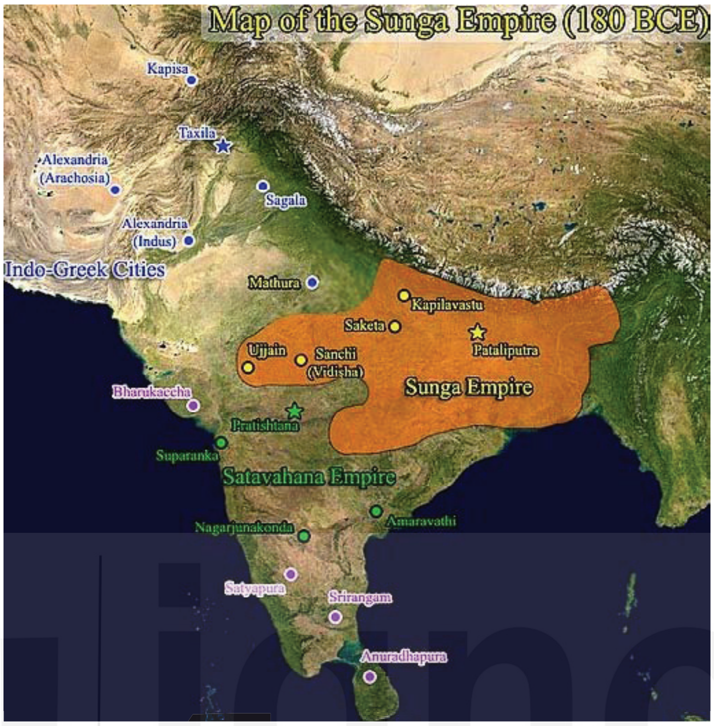

शुंग व समकालीन साम्राज्य (लगभग 185-75 बी.सी.ई.)। श्रेयः विंडी सिटी ड्यूड। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Sunga_map.jpg)।

शुंगों का क्षेत्र मौर्य साम्राज्य के केवल एक हिस्से तक फैला था। इसमें पाटलिपुत्र, अयोध्या और विदिशा शामिल थे। कुछ स्थानों पर शासन की देखभाल के लिए *वाइसराय* को रखा गया था। माना जाता है कि शुंगों का संबंध *ब्राह्मण* भारद्वाज *गोत्र* से था। उन्होंने वैदिक प्रथाओं और बलिदानों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया था। अयोध्या नरेश धन के शिलालेख में पुष्यमित्र द्वारा दो *अश्वमेध* यज्ञों के करने का उल्लेख मिलता है (सिंह 2009ः 372)। अंतिम शुंग राजा, देवभूति, अपने *ब्राह्मण* मंत्री वासुदेव द्वारा तैयार किए गए शड्‌यंत्र का शिकार हो गया जिसने कण्व वंश की स्थापना की। यह एक अल्पकालिक राज्य था। 30 बी.सी.ई. में मगध के कण्व राजाओं ने मित्र वंश के लिए रास्ता बनाया। अंततः मित्र वंश का स्थान शकों ने ले लिया।

पहली शताब्दी बी.सी.ई. के आसपास ओडिशा के तटीय और पूर्वी भाग में खारवेल एक महत्वपूर्ण शासक के रूप में उभरा। वह चेदी से जुड़ा मेघवाहन वंश का था (थापर 2002ः 211)। उसके शासन में कलिंग एक स्वतंत्र राज्य था। ऐसा कहा जाता है कि मगध, सातवाहन और पांड्य देशों सहित देश के एक बड़े हिस्से पर उसका शासन था। वह जैन धर्म का अनुयायी था। हाथीगुम्फा शिलालेख में उसके द्वारा किए गए विजयों, संरक्षण और सामाजिक कार्यों का विवरण मिलता है। कलिंग, कभी मौर्य प्रशासन के केंद्रों में से एक था। इस क्षेत्र में राज्य गठन की प्रक्रिया को मौर्य साम्राज्य के साथ सम्पर्क के रूप में देखा गया था।

मौर्य साम्राज्य की कुछ विशेषताएँ, जैसे विभिन्न धार्मिक प्रथाओं के प्रति सम्मान, लोक कल्याण और सामाजिक कार्यों को खारवेल ने अपनाने की कोशिश की थी। हाथीगुम्फा शिलालेख में जैन भिक्षुओं को संरक्षण देने, ब्राह्मणों को करों में छूट देने तथा हर संप्रदाय को सम्मान देने का उल्लेख मिलता है। इसमें सिंचाई के लिए नहरों और जलाशयों के निर्माण का भी उल्लेख है (थापर 2002ः 212-213)। उसने आहत सिक्कों को भी जारी रखा। हालाँकि, राजवंश लंबे समय तक नहीं चला और खारवेल की मृत्यु के बाद गायब हो गया।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

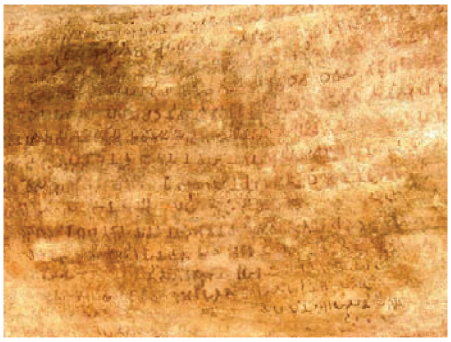

बाएँ: कलिंग के राजा खारवेल का हाथीगुम्फा शिलालेख। श्रेय: विंडराईडर 24584। स्रोत: विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Hatigumfa.jpg)।

दाएँ: उदयगिरी गुफा परिसर, भुवनेश्वर, ओड़िशा के पास जहाँ हाथीगुम्फा शिलालेख स्थित है। ए.एस.आई. स्मारक संख्या एन-ओआर – 62। श्रेय: बर्नार्ड गैग्नन। स्रोत: विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Udayagiri_Caves_-_Rani_Gumpha_01.jpg)।

14.6.2 इंडो-ग्रीक

बैक्ट्रिया के *यवन* मूल रूप से पश्चिम एशिया के सेल्यूसिड साम्राज्य के *क्षत्रप* (अधीनस्थ शासक) थे। बैक्ट्रिया आधुनिक उत्तरी अफगानिस्तान का प्राचीन नाम है। तीसरी शताब्दी बी.सी.ई. के मध्य में सेल्यूसिड साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह हुआ और स्वतंत्र बैक्ट्रिया का उद्भव हुआ। ये बैक्ट्रियाई अपने राज्य का विस्तार करते हुए हिंदुकुश पर्वत के दक्षिण में पहुँचे। लगभग 145 बी.सी.ई. में उन्होंने बैक्ट्रिया पर नियंत्रण खो दिया और भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था (सिंह 2009: 373)। बैक्ट्रिया के *यवनों* ने दूसरी शताब्दी बी.सी.ई. से पहली शताब्दी बी.सी.ई. के बीच भारत के उत्तर-पश्चिम भाग में शासन किया। इन्हें इंडो-ग्रीक के रूप में जाना गया (सिंह 2009: 373)।

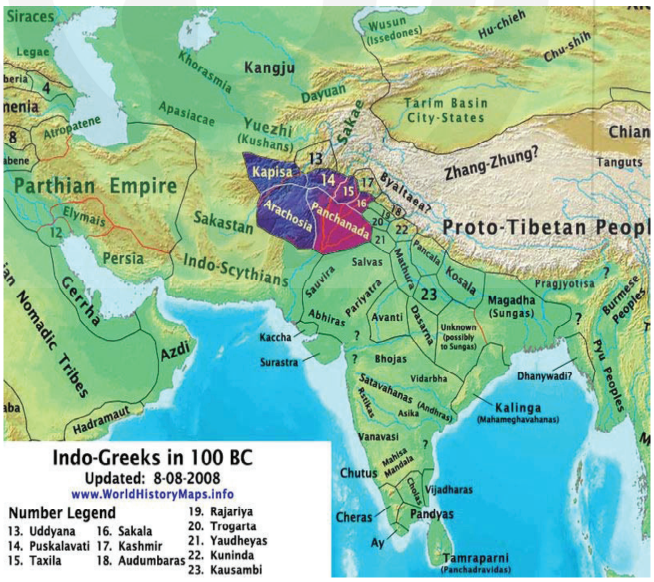

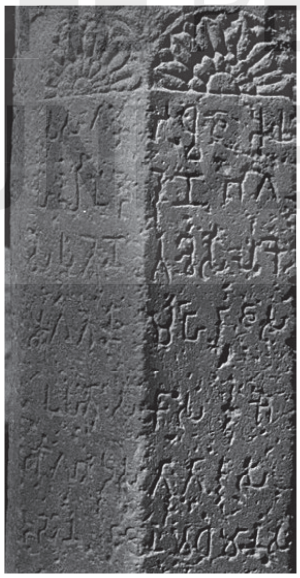

बाएँ: लगभग 100 बी.सी.ई. में इंडो ग्रीक राज्य। श्रेय: थॉमस लेसमैन। स्रोत: विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Indo-Greeks_100bc.jpg)।

दाएँ: इंडो-ग्रीक राजदूत हेलियोडोरस के आदेश पर निर्मित किया गया हेलिओडोरस स्तंभ, लगभग 113 बी.सी.ई. में बनाया गया था, जो हिंदू धर्म में सबसे पहले दर्ज इंडो-ग्रीक धर्मान्तरित था। स्तंभ भारत में वैष्णववाद से संबंधित पहला ज्ञात शिलालेख है। श्रेय: Public.Resource.Org. स्रोत: विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Heliodorus_pillar_inscription.jpg).

14.6.3 शक और पह्लव वंश

हिंद-सीथियाई साम्राज्य अपने महानतम विस्तार पर (150 बी.सी.ई. – 400 सी.ई.) श्रेयः DLommes।
स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:IndoScythian Kingdom.svg)।

शक सीर दरिया (Jaxartes) में रहने वाले सिथियन जाति के थे। लगभग 2 शताब्दी बी.सी.ई., मध्य एशिया में जनजाति गतिविधियों के कारण, शक विस्थापित होकर भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में आ गए। पार्थिया ईरान में एक जगह है, जहाँ के लोग पार्थियन के रूप में जाने जाते थे। शक-पह्लव शब्द का प्रयोग आक्रमणकारियों के उन विभिन्न समूहों के लिए किया जाता था, जो पहली शताब्दी बी.सी.ई. में पार्थिया से उत्तर-पश्चिम भारत में आए थे (सिंह 2009: 375)। शक-पह्लवों का इतिहास शिलालेखों और सिक्कों के माध्यम से जाना जाता है। तक्षशिला के एक शिलालेख में शक राजा मोग और उनके क्षत्रप (राज्यपाल) पतिक का उल्लेख है। कुछ सिक्कों से सामूहिक शासन के बारे में पता चलता है। उदाहरण के लिए, ऐसा लगता है कि स्पलीराइजेस और एज़ेस I दोनों एक ही समय में सह-शासक थे। एक अन्य महत्वपूर्ण शासक गोंदोफर्निस था। उसके सिक्कों में गवर्नर और सैन्य गवर्नर की स्थिति का उल्लेख है। शकों का साम्राज्य प्रांतों में विभाजित था। प्रत्येक प्रांत सैन्य गवर्नर के अधीन था जिसे *महाक्षत्रप* कहा जाता था। प्रांतों के प्रखंड को *क्षत्रप* के रूप में जाना जाता था, जो राज्यपालों के अधीन था। इन्हें अधीनस्थ शासकों के रूप में भी जाना जाता था। इन *क्षत्रपों* को शिलालेख जारी करने और सिक्कों को अपने अधिकार में लेने का हक था। इससे पता चलता है कि इन राज्यपालों ने अपने शासकों के अधीन काम करने वाले राज्य अधिकारी के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्र रूप से कार्य किया होगा। शकों ने ईरान के अखमेनिड और सेल्यूसिड शासन व्यवस्था के आधार पर अपना शासन चलाया था (थापर 2002: 220)। इनके साम्राज्य-विस्तार में क्षत्रपों और महाक्षत्रपों की मुख्य भूमिका रही होगी।

14.6.4 कुषाण वंश

कुषाण मध्य एशिया से भारतीय उपमहाद्वीप में आए थे। वे यू-ची जनजाति की एक शाखा थे। यू-ची जनजाति पहले मध्य एशिया से संबंधित थी और बाद में वू-सुन द्वारा विस्थापित होकर पश्चिम में चली गई थी। इस समय पर यू-ची जनजाति को दो भागों में विभाजित किया गया था – महान यू-ची और लघु यू-ची। इनमें से कुछ पूर्व तिब्बत क्षेत्र में, कुछ पश्चिम की ओर चले गए थे तथा बाकी बचे अफगानिस्तान में बस गए थे। महान यू-ची को ऑक्सस की घाटी के पाँच घरानों में विभाजित किया गया था, इनमें से एक कुषाण भी थे। प्रथम शताब्दी के शुरुआत में कुजुल कडफिसेस ने पांचों रियासतों को मिला दिया और एक एकीकृत कुषाण

साम्राज्य की नींव रखी। कुजुल कडफिसेस के सिक्के हिंदुकुश क्षेत्र के दक्षिण में भी पाए गए हैं। उसके उत्तराधिकारी, वीमा कडफिसेस ने पहले अपने पिता के साथ सह-शासक के रूप में काम किया और बाद में स्वतंत्र रूप से शासन किया। उसने पहलवों से कंधार क्षेत्र जीत लिया और सिंधु घाटी और मथुरा क्षेत्र पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था (सिंह 2009: 376)।

कनिष्क के शासनकाल में कुषाण साम्राज्य अपने शिखर पर पहुँच गया। अधिकांश विद्वान स्वीकार करते हैं कि कनिष्क का शासनकाल 78 बी.सी.ई. से शुरू हुआ था। तब से उसके उत्तराधिकारियों ने इस तिथि से एक नए संवत् की शुरुआत करते हुए अपने अभिलेखों को दिनांकित किया (सिंह 2009: 376)। कनिष्क के शासनकाल के दौरान साम्राज्य का विस्तार पूर्व में गंगा घाटी तक और दक्षिण में मालवा क्षेत्र तक था। कुषाणों का प्रभाव पश्चिमी और मध्य भारत में भी देखा गया, जहाँ शक-*क्षत्रपों* ने कुषाण शासकों के आधिपत्य को मान्यता दी थी। कनिष्क का शासन का उल्लेख बिहार के पाटलिपुत्र और चंपा में स्थित राबाटक शिलालेख में भी मिलता है (चक्रवर्ती 2013: 178)। चीनी स्रोत होउ-हान-शू बताता है कि निम्न सिंधु क्षेत्र पर विजय प्राप्त करने के कारण कुषाण शक्तिशाली और अमीर बन गए थे।

बी. एन. मुखर्जी के अनुसार, मालवा क्षेत्र के खनन और निम्न सिंधु क्षेत्र में व्यापार की संभावना के कारण कुषाणों का विस्तार हुआ। इसके अलावा, यह तर्क भी दिया गया कि मकरान तट के साथ व्यापारिक संबंधों में गिरावट के कारण कुषाणों का पतन हुआ (सिंह 2009: 377)। यह इस बात का संकेत है कि आर्थिक संभावनाओं ने कुषाण शासकों के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कनिष्क का साम्राज्य संभवतः अधिकांश अफगानिस्तान, चीन का पूर्वी भाग और मध्य एशिया में ऑक्सस घाटी के उत्तर तक विस्तारित था। इन विशाल क्षेत्रों का समावेश व्यापार के कारण ही था (सिंह 2009: 377)। दूसरे शब्दों में कहें तो इस विशाल साम्राज्य ने भारत के जरिये चीन से पश्चिम एशिया तक व्यापार को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महान रेशम मार्ग कुषाण साम्राज्य के उत्तरी भाग से होकर गुजरता था।

प्राचीन रेशम मार्ग का विस्तार। श्रेयः Whole world - land and oceans 12000.jpg नासा /गोडार्ड स्पेस फ्लाइट सेंटर। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Silk_route.jpg)।

कुषाण साम्राज्य मूलतः एक मध्य एशियाई राज्य था। बाद में, इसका विस्तार अफगानिस्तान और उत्तर-पश्चिमी भारत तक हुआ। इस विशाल साम्राज्य का केंद्र बैक्ट्रिया था। भारत में, पुरुषपुर (पेशावर) और मथुरा, कुषाणों की दो महत्वपूर्ण राजधानियाँ थीं। कनिष्क के तात्कालिक उत्तराधिकारी वशिष्क, हुविष्क, कनिष्क प्रथम और वासुदेव प्रथम थे। दूसरी शताब्दी के मध्य कुषाण साम्राज्य में गिरावट आई थी (सिंह 2009: 377)। कुषाण शासकों ने भव्य उपाधियाँ लीं:

- *देवपुत्र* (स्वर्ग का पुत्र),
- *महाराजाधिराज* (राजाओं के राजा),

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

- *सोटर* (रक्षक), और
- *कैसर* (सीज़र)।

थापर के अनुसार, ये उपाधियां फारसियों, चीनी और रोमनों से उधार ली गई थीं; कुषाण शासकों के प्रभामंडल को चित्रित करने की शैली भूमध्य सागर के रीति-रिवाजों से प्रभावित थीं (थापर 2002: 223)। पता चलता है कि उस समय अपने से निम्न स्तर वाले राजाओं और प्रमुखों पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिए कुषाण राजाओं ने इन उपाधियों को अपनाया था। एक ओर, वे साम्राज्य में अपनी स्थिति को वैधता प्रदान करने की कोशिश कर रहे थे; तो दूसरी ओर, इन उपाधियों को लेने में मध्य एशियाई परंपराओं का प्रभाव भी दिखाई दे रहा था। कुषाणों की प्रशासन प्रणाली केंद्रीकृत नहीं दिखाई देती है। विशाल साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में बहुत लोगों का नियंत्रण था। कुछ क्षेत्र राजा के प्रत्यक्ष नियंत्रण में थे जबकि अन्य क्षेत्रों पर निम्न स्तरीय शासकों-*क्षत्रपों* का नियंत्रण था। कुछ ऐसे भी क्षेत्र थे, जिन्होंने कुषाण शासकों के अधिपत्य को स्वीकार किया, लेकिन अपने क्षेत्रों में अपने तरीके से शासन किया। इसलिए, कनिष्क शासनकाल में नियंत्रण की त्रिस्तरीय प्रणाली का पता चलता हैः

- प्रत्यक्ष नियंत्रण,
- स्थानीय क्षत्रपों द्वारा नियंत्रण, और
- अधीनस्थ शासकों द्वारा नियंत्रण (थापर 2002: 223)

कनिष्क को बौद्ध धर्म का एक महान संरक्षक माना जाता है। उन्हें पुरुषपुर में एक स्तूप की स्थापना और उसे काशगर, यूनान और चीन में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए दूत-कर्म भेजने का श्रेय जाता है। उनके शासनकाल में एक बौद्ध परिषद आयोजित की गई थी। हैरानी की बात है कि उनके सिक्कों में भारतीय, ग्रीक और पश्चिम एशियाई विभिन्न धार्मिक देवताओं का प्रतिनिधित्व मिलता है। इससे पता चलता है कि साम्राज्य निर्माण में उन्होंने धार्मिक विविधता को स्वीकार किया था। यह उनके विशाल साम्राज्य में मौजूद विभिन्न धार्मिक प्रवृत्तियों के शासकों को एक साथ जोड़ने की नीति रही होगी। राज्य ने अलग-अलग समुदायों को समायोजित करके स्वयं को बनाए रखने की कोशिश रही होगी।

बाएँः बिना सिर के कनिष्क की प्रमुख प्रतिमा। मथुरा म्यूजियम, उत्तर प्रदेश। श्रेयः बिस्वरूप गांगुली। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Kanishka_enhanced.jpg)।

दाएँः कनिष्क ने *महायान* बौद्ध धर्म का उद्घाटन किया। कैनवस पर एक तैल चित्रण, 1910। श्रेयः एम्ब्रोस डुडले। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Kanishka-Inaugurates-Mahyana-Buddhism.jpg)।

बाएँः ग्रीक अक्षर "BOΔΔO" (बुद्ध) के साथ कनिष्क का एक सिक्का। प्रत्यक्ष स्रोतः सीएनजी सिक्के। (http://www.cngcoins.com)। चित्र स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Coin_of_Kanishka_I.jpg)।

दाएँः कनिष्क द्वारा निर्मित किला मुबारक, पंजाब के बठिंडा में स्थित। श्रेयः en: उपयोगकर्ताः Guneeta। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Qila_Mubarak_in_Bathinda.jpg)।

ईरानी सासानिडों की विजय के कारण कुषाणों का पतन होने लगा। शीर्ष केंद्र होने के कारण बैक्ट्रिया ईरान के हाथों में चला गया था (चक्रवर्ती 2013: 180)। इसी काल में भारत के विभिन्न हिस्सों में अनेक प्रकार के स्थानीय और उप-क्षेत्रीय रियासतों का पुनरुत्थान हुआ था।

14.6.5 गैर राजतंत्र / *गण* शासन / कबीले पर आधारित राज्य-व्यवस्था

इस काल में उत्तर भारत के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग आदिवासी या कबीले-आधारित राज्य-व्यवस्थाओं का भी उद्भव हुआ। आर्जुनायन मथुरा (राजस्थान में अलवर क्षेत्र) के दक्षिण-पूर्व में दिखाई दिए; मालव पंजाब में उत्पन्न हुए और बाद में राजस्थान चले गए। यौधेय पूर्वी पंजाब, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के क्षेत्रों में रहते थे। कुनिंद शिवालिक पहाड़ियों के नीचे तथा त्रिगर्त रावी और सतलुज नदी घाटियों के बीच रहते थे। यौधेय पाणिनि के समय भी पेशेवर योद्धाओं के रूप में प्रसिद्ध थे। कहा जाता है कि इन्होंने शक राजा रूद्रदमन को पराजित किया था। इनमें से कई जनजातियों ने महाकाव्य नायकों और किंवदंतियों के माध्यम से क्षत्रिय होने का दावा किया था और उनके सिक्के, जैसे कि यौधेय, अक्सर *गण* या *जनपद* के नाम से जारी किए जाते थे (थापर 2002: 211)। दूसरी जनजातियाँ, जैसा कि उनके बारे में लोकप्रिय है, गणतांत्रिक थीं। इस काल में सिबि, मालव, त्रिगर्त प्रमुख थीं।

इन *जनपदों* ने उत्तर और उत्तर-पश्चिमी भारत को छिन्न-भिन्न कर दिया था, साथ ही, अयोध्या, कौशाम्बी, मथुरा और अहिच्छत्र जैसी स्वतंत्र प्रांतों ने भी अपनी शक्ति का पुनः दावा किया, जो पहले मौर्यों के आगे झुक गए थे।

14.6.6 पश्चिम भारत के शक-*क्षत्रप*

पश्चिमी भारत में शक-क्षत्रप सत्ता में आए। इससे पहले, वे कुषाणों के सामंत थे और उन पर निष्ठा रखते थे। धीरे-धीरे, वे आगे आए और उन्होंने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की। प्रारंभिक शताब्दियों सी.ई. में क्षत्रप शासकों की क्षहरात और कर्दमक दो जातियाँ थीं। भूमक और नहपाण, क्षहरात वंश के महत्वपूर्ण शासक थे और वे कुषाणों के प्रति वफादार थे।

चष्टन कर्दमक वंश का संस्थापक था। उसे कुषाणों के दक्षिणी-पश्चिमी प्रांत के वायसराय के रूप में नियुक्त किया गया था (सिंह 2009: 379)। कर्दमकों ने क्रमशः *क्षत्रप* और *महाक्षत्रप* के साथ वरिष्ठ और कनिष्ठ शासकों की प्रथा का पालन किया। रुद्रदमन प्रथम, कर्दमक वंश का प्रसिद्ध शासक था। 150 सी.ई. में वह सिंहासन पर बैठा। उसकी विजयों के बारे में जूनागढ़ शिलालेख में अंकित है। इसमें उल्लेख है कि मालवा, सौराष्ट्र, गुजरात और उत्तरी कोंकण इस शासक द्वारा विजित क्षेत्र थे। संभवतः उसने सातवाहन वंश के सातकर्णी शासक गौतमीपुत्र सातकर्णी को दो बार हराया था (सिंह 2009: 381)।

14.6.7 सातवाहन वंश

मौर्य काल के बाद कई स्थानीय शासकों ने विदर्भ, पूर्वी दक्कन, कर्नाटक और पश्चिमी महाराष्ट्र जैसे क्षेत्रों में शासन करना शुरू कर दिया। सातवाहन साम्राज्य का निर्माण कई स्थानीय केंद्रों के एकीकरण से हुआ था। सातवाहनों का संबंध संभवतः आंध्र जनजाति के किसी कबीले या शाखा से था, जिसकी शक्ति प्रथम शताब्दी बी.सी.ई. के आस-पास दक्कन और पश्चिमी भारत में धीरे-धीरे बढ़ रही थी (चक्रवर्ती 2013ः 181)। माना जाता है कि प्रथम शताब्दी बी.सी.ई. के आसपास उनका शासन शुरू हुआ था और तीसरी शताब्दी की शुरुआत में समाप्त हुआ था। सिमुक को इस राजवंश के संस्थापक के रूप में जाना जाता है जिसका राजनीतिक केंद्र प्रतिष्ठान या पैठन था।

प्राकृत भाषा में लिखित नासिक शिलालेख में सातवाहन शासक गौतमीपुत्र सातकर्णी का उल्लेख *एकाब्राह्मण* के रूप में किया गया है (सिंह 2009ः 383)। इस राजवंश के एक और शासक सतकर्णी प्रथम ने अश्वमेध यज्ञ किया था, जो नानाघाट शिलालेख में उल्लिखित है। ये तथ्य बताते हैं कि स्थानीय शासकों ने सातवाहन वंश के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे आरंभिक स्वदेशी जनजातियाँ थीं जो एक राजतंत्र व्यवस्था में परिवर्तित हो गई थीं। इस राजवंश के शासकों ने वैदिक कर्मकांडों को अपनाकर स्वयं को पवित्र करने का प्रयास किया होगा।

बाएँः चूना पत्थर से निर्मित पटिया (slab) तीसरी शताब्दी बी.सी.ई.। इस पटिया को पहली बार पहली शताब्दी बी.सी.ई. में बनाया गया था। जब अमरावती के महान स्तूप को सातवाहन शासकों के संरक्षण में पुनर्निर्मित किया गया था, तब एक बुद्ध आकृति प्रवेश द्वार में मानव रूप में बनाई गई थी। ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन में संरक्षित। श्रेयः ग्रिफिंडोर। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:British_Museum_Asia_14.jpg)।

दाएँः महाराष्ट्र के अमरावती में गौतमीपुत्र सातकर्णी की वर्तमान मूर्ति। श्रेयः कृष्णा चैतन्य वेलगा। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Gautami_Putra_Satkarni_Statue_in_Amaravathi.jpg)।

सातवाहन साम्राज्य में आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर कर्नाटक, दक्षिण मध्य प्रदेश और सौराष्ट्र शामिल थे। माना जाता है कि ओडिशा के चेदी राजवंश के खारवेल ने सातवाहन शासक सातकर्णी प्रथम के अधिकार को चुनौती दी थी, फिर भी, ऐसा प्रतीत होता है कि उनके नियंत्रण में एक विशाल क्षेत्र था। यह उनके द्वारा ली गई उपाधि *दक्षिणापथ* के स्वामी से समझा जा सकता है।

गौतमीपुत्र सातकर्णी इस वंश का प्रसिद्ध शासक था। उसके काल में साम्राज्य अपने शिखर

पर पहुँच गया था। नासिक गुफा के शिलालेख में "शकों, पहलवों और यवनों का नाश करने वाले, क्षत्रियों को उखाड़ फेंकने वाला और सातवाहनों के वैभव के संयोजक" के रूप में उसका उल्लेख मिलता है (सिंह 2009: 383)। उसके समय में सातवाहन साम्राज्य की सीमा उत्तर में मालवा और सौराष्ट्र से लेकर दक्षिण में कृष्णा डेल्टा तक और पूर्व में बरार से लेकर पश्चिम में कोंकण तट तक थी। शिलालेख में यह भी उल्लेख है कि उसके शासनकाल में बौद्ध भिक्षुओं को निवास के लिए भूमि का एक टुकड़ा दान किया गया था। इतिहास में पहली बार नियमों और शर्तों के साथ भूमि दी गई थी, अर्थात् भूमि में शाही प्राधिकरण द्वारा हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा, यह राज्य नियंत्रण से मुक्त होगा और भूमिधारक कुछ विशेषाधिकारों का आनंद ले सकेंगे (सिंह 2009: 384)। संभवतः, यज्ञश्री सातकर्णी, जिसे गौतमीपुत्र यज्ञ श्री के नाम से भी जाना जाता है, पूर्वी और पश्चिमी दक्कन को नियंत्रित करने हेतु सातवाहन वंश का अंतिम शासक था। सातवाहनों के क्रमिक पतन के बाद कई राजवंशों जैसे दक्षिण क्षेत्र में वाकाटक, मैसूर में कदंब, महाराष्ट्र में अभिरास और आंध्र क्षेत्र में इक्ष्वाकु का उदय हुआ (सिंह 2009: 383)।

बाएँ अथवा मध्यः गौतमीपुत्र सातकर्णी के सिक्के, लगभग 108-132 सी.ई., लॉस एंजिल्स काउंटी कला संग्रहालय, कैलिफोर्निया, यू.एस. में संरक्षित। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Coin of Gautamiputra Satakarni (%3F) LACMA M.84.110.3 (1 of 2).jpg; https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Coin of Gautamiputra Satakarni (%3F) LACMA M.84.110.3 (2 of 2).jpg)।

दाएँः गौतमीपुत्र यज्ञ सातकर्णी के सिक्के, लगभग 167-196 सी.ई.। श्रेयः क्लासिकल न्यूमिस्मैटिक ग्रुप (http://www.cngcoins-com)। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Gautamiputra_Yajna_Satakarni.jpg)।

सातवाहन साम्राज्य को छोटे प्रांतों में विभाजित किया गया था, जिन्हें *अहार* कहा जाता था। प्रत्येक प्रांत नागरिक और सैन्य अधिकारियों के अधीन था। अधिकारियों के लिए उपयोग किए जाने वाले पद निम्नलिखित हैं:

- *अमात्य*,
- *महाभोज*,
- *महासेनापति*, और
- *महारथी*

अमात्य सर्वोच्च अधिकारी था। ग्राम सबसे निम्न प्रशासनिक इकाई थी। नगर प्रशासन के प्रमुख जिन्हें *नगरसभा* और ग्राम प्रशासन के प्रमुख *ग्रामसभा* के नाम से जाने जाते थे, इनका उल्लेख सातवाहन काल के स्रोतों में भी मिलता है। दोनों अधिकारी स्वतंत्र रूप से अपने कार्य करते थे। भिक्षुओं के लिए गुफाओं के निर्माण-कार्य के देखभाल के लिए शासक द्वारा नियुक्त किए जाने वाले एक विशेष अधिकारी *उपरक्षित* का भी उल्लेख है।

IGNOU THE PEOPLE'S UNIVERSITY

उपर्युक्त पदों से संकेत मिलता है कि उनकी प्रशासनिक प्रणाली सामंती थी। सत्ता शासक तक ही सीमित नहीं थी। बल्कि यह अधिकारियों के पदानुक्रम के अनुसार वितरित की गई थी। राजकोषीय और प्रशासनिक अधिकार सामंती प्रमुखों द्वारा भोगे जाते थे। कुछ को अपने सिक्के जारी करने की अनुमति दी गई और कुछ ने शाही परिवार के साथ वैवाहिक गठबंधन कर लिया था। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि प्रशासन को स्थानीय व्यवस्था द्वारा संचालित किया जाता था। प्रांतों और क्षेत्रों में शाही अधिकारियों का कोई हस्तक्षेप नहीं था। हालांकि, राजतंत्र का एक मजबूत तत्व राजवंश के केंद्र में मौजूद था।

एकदम दक्षिण में तीन महत्वपूर्ण राज्य थे, जो मौर्य काल के समय से थेः

- चेर, जिसने मालाबार क्षेत्र को नियंत्रित किया,
- चोलों ने दक्षिण-पूर्वी तट और कावेरी घाटी पर प्रभुत्व जमाया, और
- पाड्य जिनका केंद्र प्रायद्वीप के चारों ओर स्थित था।

इस काल के *संगम* ग्रंथ हमें उस क्षेत्र, जहाँ इन तीन राज्यों ने शासन किया था, के समाज, पारिस्थितिकी, राजनीति और अर्थव्यवस्था की काफ़ी जानकारी देते हैं। हम जानते हैं कि दक्षिण में तीन राज्यों के प्रमुख (चेरों-चोलों-पाड्यों) निम्न विकसित क्षेत्रों के प्रमुखों के साथ लगातार युद्ध करते थे। उदाहरणस्वरूप, *वेलिर* सरदार, दक्षिण-पूर्वी तट पर रोमन व्यापार के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर नियंत्रित करने हेतु प्रसिद्ध थे।

यद्यपि मौर्योत्तर काल में विभिन्न राजवंशों द्वारा साम्राज्यों के निर्माण हेतु प्रयास किए गए थे, लेकिन उनमें से ज्यादातर एक-दूसरे का विरोध कर रहे थे। इसके अलावा उप-क्षेत्रीय शक्तियों को पूरी तरह से दबाया नहीं जा सकता था। इसलिए, जहाँ एक तरफ़ मौर्यों की राजनीतिक गिरावट ने कई स्थानीय शक्तियों के उत्थान की स्थिति पैदा की थी, वहीं मौर्य काल के दौरान हुआ आर्थिक विस्तार बेरोक-टोक जारी था। मौर्यों के अधीन मगध साम्राज्य में संसाधनों की कमी नहीं थी, बल्कि उसके संगठन और नियंत्रण का संकट था।

14.7 मौर्योत्तरकाल : अर्थव्यवस्था और समाज

इस अवधि में आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में गतिशील परिवर्तन देखा गया।

राजस्व का एक महत्वपूर्ण स्रोत कृषि था। पहली बार सातवाहन और कलिंग राज्यों में स्थायी कृषि का प्रसार देखा गया था। नासिक के शिलालेख से हमें इन क्षेत्रों में नारियल उगाने के बारे में भी जानकारी मिलती है (चक्रवर्ती 2013ः 194)। *मिलिंदपन्हो* में खरपतवार हटाने से लेकर फसलों की कटाई तक कृषि के आठ विभिन्न चरणों का उल्लेख है। यह इस काल में होने वाली फसलों की किस्मों और विभिन्न प्रकार के चावल की खेती (शाही और मोटे) की गणना करता है। तक्षशिला और सांची से हल का लौह फलक, कुल्हाड़ी, प्रहार, हुकुम और दरांती जैसे कृषि उपकरणों के पुरातात्विक साक्ष्य मिले हैं (चक्रवर्ती 2013ः 194)। एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि *गहपति* (बड़े ज़मींदार) और *कुटुम्बिका* और *हलिका* (काश्तकार) बौद्ध *संघ* के दानकर्ता या संरक्षक के रूप में दिखाई देते हैं। यह आर्थिक दृष्टि से काश्तकारों की उच्च स्थिति को दर्शाता है। सिंचाई की सुविधा प्रदान करने की राज्य और व्यक्तिगत पहल इस काल में भी जारी रही। शक शासक रुद्रदमन प्रथम के शासनकाल में सुदर्शन झील की मरम्मत की गई थी। कलिंग के नंदों द्वारा नहरों का निर्माण किया गया था। नासिक शिलालेख में दर्ज है कि नहपान के शासनकाल में जलाशय बनाए गए थे। एक अन्य शिलालेख से पता चलता है कि थियोडोरस नाम के एक ग्रीक ने तक्षशिला के पास एक जलाशय खुदवाकर दान किया था (चक्रवर्ती 2013ः 194)।

इस काल में उप-महाद्वीपों के बीच व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि देखी गई। गंगा डेल्टा में ताम्रलिप्ति के साथ उत्तर-पश्चिम में तक्षशिला से जुड़ा एक महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग उत्तरापथ था। उत्तर भारत के अन्य प्रमुख व्यापार बिंदु थे:

- उत्तर-पश्चिम में पुष्कलावती,
- पश्चिम में पटल और भृगुकच्छ, और
- दक्षिण में मुजिरिस। (सिंह 2009: 407)

कुषाण और सातवाहन छोटे पैमाने पर लेन-देन के लिए सिक्कों का उपयोग करते थे। सोने, चांदी और तांबे के सिक्कों ने व्यापारिक गतिविधियों को सुविधाजनक बना दिया था। *धर्मशास्त्रों* में स्वदेशी और विदेशी वस्तुओं का मुनाफा तथा कर से संबंधित प्रावधान बना था। *जातकों* में लंबी यात्रा की जानकारी मिलती है। इसमें यात्रा के लिए बैलगाड़ी, रथ और पैदल लोगों के लिए विभिन्न सुविधाओं का उल्लेख है। थके हुए यात्रियों के आराम के लिए विश्राम गृह बनवाए गए थे (सिंह 2009: 406)।

लंबी दूरी के समृद्ध व्यापारिक संबंध इस काल में एक अन्य ऐतिहासिक परिवर्तन था। रोमन साम्राज्य में चीन के रेशम की भारी मांग थी। रेशम पूर्वी एशिया के दूर दराज क्षेत्रों के पास भूमार्ग से होकर पहुँचता था। रेशम मार्ग के दो रास्ते थे – उत्तरी और दक्षिणी रेशम मार्ग। बैक्ट्रिया दक्षिणी रेशम मार्ग पर स्थित था। महत्वपूर्ण मुद्दा यह था कि जब कुषाणों ने सत्ता में प्रवेश किया और बैक्ट्रिया पर कब्जा कर लिया, तो रोमन साम्राज्य ने भारतीय उपमहाद्वीप से व्यापार का एक वैकल्पिक तरीका अपनाया। इसने कुषाणों को अपार बल प्रदान किया। यह साम्राज्य रेशम मार्ग के आधार पर फला-फूला। दक्षिण-पश्चिम मानसूनी हवाओं की खोज ने हिंद महासागर में समुद्री व्यापार की संभावनाओं को उत्पन्न किया।

पेरिप्लस और टॉलेमी के *ज्योगर्फी* में उल्लेख है कि चीनी रेशम ने उत्तर-पश्चिमी भारत में बैक्ट्रिया और काबुल के माध्यम से प्रवेश किया, मथुरा पहुँचा और वहाँ से उज्जयिनी। उज्जयिनी से व्यापारी और उत्पाद बंदरगाह शहर बेरिगाजा पहुंचा। यहाँ से चीनी रेशम लाल सागर और पूर्वी भूमध्य क्षेत्र के बंदरगाहों तक पहुँचता था (चक्रवर्ती 2013: 202)। इसने भारतीय व्यापारियों और रोम के बीच व्यापारिक संबंधों का मार्ग प्रशस्त किया। भारत से निर्यात में शामिल थे:

- हीरे, मोती जैसे कीमती रत्न;
- हाथी दांत के उत्पाद;
- बेहतरीन वस्त्र; तथा
- मसाले।

रोमन साम्राज्य में काली मिर्च की माँग अधिक थी। आयात होने वाली वस्तुओं में शामिल थे:

- चीनी रेशम,
- विशिष्ट मिट्टी के बर्तन जैसे अरेटीन बर्तन,
- आयातित एम्फ़ोरा, और
- भूमध्यसागरीय मदिरा (चक्रवर्ती 2013: 204-205)।

भारत तथा पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच व्यापार संपर्क इस काल में तेज हो गया था।

इस काल में उत्तर-पश्चिम भारत में फलते-फूलते व्यापार संबंधों और प्रवासी समूहों के निरंतर सम्पर्क ने शिल्प विशेषज्ञता के लिए पृष्ठभूमि प्रदान की। *मिलिंदपन्हो* में शिल्प में विशिष्ट 60 प्रकार के लोगों का उल्लेख है जैसेः

- कुम्हार,
- बढ़ई,
- धातु कर्मी,
- बेंत का सामान बनाने वाले
- बांस के सामान के निर्माता,
- हाथीदांत के कारीगर आदि।

इन कारीगरों का संगठन गिल्ड (*श्रेणियाँ)* मौर्योत्तर काल की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। *श्रेणी* पेशेवरों, व्यापारियों या कारीगरों का एक समूह था, जिसमें व्यवसायों से संबंधित वे अपने सामान्य हितों और नीतियों पर फैसला लेते थे। पश्चिमी दक्कन के शिलालेखों में निम्नलिखित श्रेणियों का उल्लेख हैः

- बुनकर,
- कुम्हार,
- आटा निर्माता,
- तेल मिल,
- बांस श्रमिक, और
- व्यापारी।

इन समूहों का शाही अधिकारियों के साथ घनिष्ठ संबंधों का पता चलता है (सिंह 2009ः 404)।

ब्राह्मणवादी साहित्य *मनुस्मृति* और *याज्ञवाल्क्य स्मृति* चर्तु-*वर्ण* व्यवस्था को संरक्षण प्रदान करता है। साथ ही कई जातियों को समायोजित भी करता है। दो अलग-अलग वर्णों के मेल से पैदा होने वाली संतानों को *जाति* का दर्जा दिया गया था तथा विशिष्ट या वंशानुगत व्यवसायों द्वारा जातियों को निरूपित किया जाता था। *मनुस्मृति* में क्षत्रियों के रूप में *व्रात्य क्षत्रियों* का भी उल्लेख है, जिन्हें अनुष्ठान न करने के कारण निम्न माना जाता था (सिंह 2009ः 418)। राज्य समाज के क्रमिक प्रसार से उत्पन्न ब्राह्मणवादी संरचना में जातियों का प्रसार आदिवासी समूहों के अवशोषण के कारण हो सकता है। मध्य और पश्चिम एशिया से आने वाली विदेशी जनजातियों को *व्रात्य क्षत्रियों* के रूप में आत्मसात किया जाता था। इससे पहले, उन्हें बाहरी लोगों (*यवनों*) के रूप में माना जाता था, लेकिन धीरे-धीरे पतित क्षत्रियों के रूप में उन्हे *ब्राह्मण* साहित्य में जगह दी गई (चक्रवर्ती 2013ः 210)। महिलाओं की स्थिति के बारे में *मनुस्मृति* में पत्नियों की सुरक्षा और उन्हें पुरुषों के नियंत्रण में रखने पर ज़ोर दिया गया। इसमें कहा गया है कि महिलाओं को पिता, फिर पति और फिर बेटे के संरक्षण में होना चाहिए। घर में महिलाओं को एक अधीनस्थ का दर्जा दिया गया है, बेटे को प्राथमिकता दी गई तथा बेटी और महिलाओं को घरेलू क्षेत्र तक सीमित रखा गया है। उच्च वर्णों के लिए विवाह के आदर्श रूप जैसे *ब्रह्म, दैव, आर्ष* और *प्रजापत्य* की अनुमति थी और निम्न वर्णों के लिए *असुर, गन्धर्व, राक्षस* और *पैशाच* विवाह निर्धारित थे। अगर हम *महाभारत* में देखें तो अर्जुन और सुभद्रा के बीच का विवाह *राक्षस* विवाह था। आश्चर्य है कि नियामक साहित्य में विवाह के *स्वयंवर* रूप का उल्लेख नहीं है (चक्रवर्ती 2013ः 212)। दूसरी शताब्दी बी.सी.ई. के *स्मृति* साहित्य में देखा गया कि महिलाओं की संपत्ति (*स्त्रीधन*) को मान्यता दी गई और इस संबंध में निर्देश भी दिए गए थे।

सातवाहन शासक अपने नाम के आगे माता का गोत्र लगाते थे। इससे पता चलता है कि माता को महत्वपूर्ण माना गया होगा, क्योंकि उनके नाम के माध्यम से वंश का पता लगाया जाता है। शिलालेखों से संकेत मिलता है कि सातवाहन वंश की महिलाओं को दान देने का अधिकार दिया गया था। अन्य पुरालेखों में बताया गया है कि बड़ी संख्या में महिलाएँ, जिनका संबंध शाही वर्ग से नहीं था, वे भी बौद्ध स्थलों पर दानकर्ता थीं। इससे पता चलता है कि इन महिलाओं के पास कुछ आर्थिक स्वतंत्रता थी।

बोध प्रश्न 2

1) इंडो-ग्रीक कौन थे?

....

....

....

....

....

2) शक वंश की राजनीतिक प्रकृति पर चर्चा करें।

....

....

....

....

....

3) कनिष्क पर एक टिप्पणी लिखें।

....

....

....

....

....

4) कुषाण शासन के महत्व पर प्रकाश डालिए।

....

....

....

....

....

5) सातवाहन वंश की प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

....

....

....

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

....

....

6) i) निम्नलिखित का मिलान करें।

1)	खारवेल	क) जूनागढ़ शिलालेख
2)	रुद्रदामन	ख. हाथीगुम्फा शिलालेख
3)	कनिष्क	ग. नासिक गुफा शिलालेख
4)	गौतमीपुत्र सातकर्णी	घ. राबटक शिलालेख

ii) निम्नलिखित का मिलान करेंः

1)	यौधेय	क. यू-ची जनजाति
2)	कुषाण	ख. पेशेवर योद्धा
3)	रुद्रदमन	ग. आंध्र वंश
4)	सातवाहन	घ. कर्दमक वंश

7) निम्नलिखित दिए गए सही वाक्यों के सामने सही (✓) का तथा गलत वाक्यों के सामने गलत (×) का चिह्न लगाएँः

1) अंतिम मौर्य राजा बृहद्रथ गौतमपुत्र सतकर्णी द्वारा मारा गया था।

2) पुष्यमित्र शुंग ओडिशा के तटीय और पूर्वी भाग में एक महत्वपूर्ण शासक के रूप में उभरा।

3) यौधेय-कुनिंद शब्द का प्रयोग उन आक्रमणकारियों के समूह के लिए किया जाता है जो पार्थिया से उत्तर-पश्चिमी भारत में आए थे।

4) कुषाण साम्राज्य ने भारत के माध्यम से चीन से पश्चिम एशिया तक रेशम व्यापार को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5) शक संभवतः आंध्र जनजाति के थे, जिनकी शक्ति दक्कन क्षेत्र में उत्पन्न हुई थी।

14.8 सारांश

इस इकाई में हमने भारतीय उपमहाद्वीप के प्रथम साम्राज्य मौर्य साम्राज्य की स्थापना पर चर्चा की। इसमें मौर्यों के उद्भव और वंशवादी इतिहास के बारे में जाना। राज्य के घटकों और प्रशासन के विस्तृत तंत्र पर प्रकाश डाला गया है। मौर्य राज्य की प्रकृति को समझने के लिए विभिन्न प्रकार के स्रोतों का सहारा लिया गया। *अर्थशास्त्र* में शासन से संबंधित आवश्यक मामलों पर प्रकाश डाला गया है। अशोक के शिलालेखों से अशोक की शाही घोषणाओं का पता चलता है और मेगस्थनीज़ के लेखों में चंद्रगुप्त मौर्य के काल में राज्य और समाज के कामकाज को शामिल किया गया। पहले की सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाएँ इस काल में भी जारी रहीं और फली-फूली। इस विशाल और विषम साम्राज्य को एक धागे में पिरोने तथा मजबूत करने में जिन शाही नीतियों ने योगदान दिया, उनका यहाँ अध्ययन किया गया है।

मौर्योत्तर काल को विविध और गतिशील राज्य व्यवस्थाओं की अवधि के रूप में जाना जा सकता है। शुंगों और कण्वों के शासन में ब्राह्मणवादी समाज को पुनर्गठित करने का प्रयास

दिखाई देता है। शक, पह्लव और कुषाणों के आक्रमणों ने सामाजिक प्रवाह को बढ़ाया और शासन के विभिन्न पहलुओं, संस्कृति और धार्मिक प्रथाओं के बीच तालमेल बिठाने की कोशिश की। भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में विदेशियों द्वारा राजतंत्र स्थापित किया गया। सिंधु-गंगा के विभाजित क्षेत्र पर यौधेयों, अर्जुनयानों आदि में आदिवासी राज्य व्यवस्थाओं को भी देखा गया। सातवाहन और कलिंग ने नए क्षेत्रों में स्वदेशी राज्य की शुरुआत की। यहाँ शहर, विशेष शिल्प और व्यापार के संजाल का भी विस्तार किया गया था।

14.9 शब्दावली

***सप्तांग* राज्य** : *अर्थशास्त्र* में इस शब्द का प्रयोग राज्य प्रणाली के सात आवश्यक अंगों को परिभाषित करने के लिए किया गया है। इसमें *स्वामी* (राजा), *अमात्य* (मंत्री), *जनपद* (क्षेत्र और प्रजा), *दुर्ग* (किलेबंद राजधानी), *कोष* (कोष), *दंड* (न्याय) और *मित्र* (पड़ोसियों के साथ संबंध) शामिल थे।

***वर्ण* व्यवस्था** : समाज को *ब्राह्मण*, क्षत्रिय, *वैश्य* और *शूद्र* चार वर्णों में बाँटा गया। इन वर्णों की स्थिति को भी क्रमवार तरीके से रखा गया। इन वर्णों के कर्तव्यों को ब्राह्मणवादी स्रोतों में तय किया गया है। जिसमें *ब्राह्मण* कर्मकांड करने वाले, क्षत्रिय अन्य वर्णों की रक्षा करने वाले, *वैश्य* व्यापारिक गतिविधियों को करने वाले तथा *शूद्र* ऊपरी तीन वर्णों की सेवा करने वाले होते थे।

धम्म : यह संस्कृत शब्द धर्म का प्राकृत शब्द है। धर्म शब्द का अर्थ है – कर्तव्य या धार्मिकता। बौद्ध सिद्धांत में इसका उपयोग बुद्ध के शिक्षाओं के लिए किया जाता है। अशोक ने इसे व्यापक अर्थ दिया।

स्त्रीधन : माता-पिता, रिश्तेदारों या दोस्तों द्वारा शादी के समय एक महिला को उपहार के रूप में प्राप्त संपत्ति।

सीता : राजा/राज्य के नियंत्रण में भूमि।

जनपद निवेश : इस शब्द का उल्लेख *अर्थशास्त्र* में मिलता है। इसका उपयोग नए क्षेत्रों में कृषि तंत्र के विस्तार के लिए किया गया। स्थिर कृषि संसाधन-आधार को बनाए रखने के लिए *अर्थशास्त्र* में इस शब्द पर ज़ोर दिया गया।

गणसंघ : यह शासन की एक प्रणाली के बारे में बताता है, जहाँ राजनीतिक शक्ति का प्रयोग शासकों के समूह द्वारा किया जाता था। एक शासक की अवधारणा यहाँ नहीं थी। इन शासकों की सभाओं के माध्यम से राजनीतिक निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते थे।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

14.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उपभाग 14.3.1 देखिए।

2) उपभाग 14.3.1 देखिए।

3) उपभाग 14.3.1 देखिए।

4) उपभाग 14.3.8 देखिए।

5) भाग 14.4 देखिए।

6) i) 1 – ग, 2 – घ, 3 – क, 4 – ख

   ii) 1 – घ, 2 – क, 3 – ङ, 4 – ग, 5 – ख

7) i) ✓ ii) × iii) ✓ iv) ✓ v) ✓

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 14.6.3 देखिए।

2) उपभाग 14.6.4 देखिए।

3) उपभाग 14.6.5 देखिए।

4) उपभाग 14.6.5 देखिए।

5) उपभाग 14.6.8 देखिए।

6) i) 1 – ख, 2 – क, 3 – घ, 4 – ग

   ii) 1 – ख, 2 – क, 3 – घ, 4 – ग

7) (i) × (ii) × (iii) × (iv) ✓ (v) ×

14.11 संदर्भ ग्रन्थ

चक्रवर्ती, रणबीर (2013) *एक्सप्लोरिंग अर्ली इंडिया अपटू ए.डी.1300*, दिल्ली : मैकमिलन.

फुस्समन, जी, (1987-88) सेन्ट्रल एंड प्रोविशियल एडमिनिस्ट्रेशन इन ऐन्शियंट इंडिया : द प्रोब्लम् ऑफ द मौर्यन इम्पायर. *इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू*, भाग 14, पृ. सं. 1-2, 43-72.

जयसवाल, के. पी. (1955) *हिन्दू पॉलिटी.* बैंगलूरः बैंगलोर प्रिंटिंग एंड पब्लिशिंग कं., (1918).

झा, डी. एन. (2009) *ऐन्शियंट इंडिया इन हिस्ट्रोरिकल आउटलाइन.* नई दिल्लीः मनोहर पब्लिशर्स, रिवाइज्ड एंड एनलार्जड एडिशन.

बोगार्ड, लेविन, जी. (1985) *मौर्यन इंडिया.* नई दिल्लीः अभिनव.

राय चौधुरी, एच. सी. (1987) *पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ ऐन्शियंट इंडिया.* नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, (रिवाइज्ड एडिशन).

शर्मा, आर.एस. (1991) *एसपैक्ट्स ऑफ पॉलिटिकल आइडियाज एंड इंस्टीट्यूशन्स इन*

ऐन्शियंट इंडिया, दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमि.

शर्मा, आर.एस. (1983) *पर्सपैक्टिव्स इन सोशल एंड इकॉनामिक हिस्ट्री ऑफ अर्ली इंडिया.* नई दिल्ली, मुंशीराम मनोहरलाल.

शर्मा, आर.एस. (1983) *मैटीरियल कल्चर एंड सोशल फॉर्मेशन्स इन ऐन्शन्ट इंडिया.* दिल्ली मैकमिलन लिमि.

शर्मा, आर.एस. (2007). *इंडियाज ऐन्शियंट पॉस्ट.* नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

शास्त्री, ए. एम. (2002) *अर्ली हिस्ट्री ऑफ द डक्कनः प्रोब्लम्स एंड पर्सपैक्टिव्सः* संदीप प्रकाशन.

सिंह, उपिंदर (2013) *ए हिस्ट्री ऑफ ऐन्शियंट एंड अर्ली मेडीवल इंडियाः फ्रॉम द स्टोन एज टू द 12थ सेंचुरी.* नई दिल्लीः पीयरसन.

थापर. आर. (1983) *अशोक एण्ड द डिक्लाइन ऑफ द मौर्याज़.* दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

थापर. आर. (1998) *मौर्याज़ रीविजिटेड.* कलकत्ताः के.पी. बागची एंड कं.

थापर. आर. (2002) *अर्ली इंडिया फ्रॉम द ओरिजिन्स टू ए.डी. 1300.* नई दिल्लीः पेंगुइन.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY